हृदय-मंथन के पाँच दिन

[महात्मा गांधी के उपवास-कालीन प्रवचनों का संग्रह]

संग्राहक

यशपाल जैन, बी० ए० एलएल० बी०

सर्वोदय साहित्य मन्दिर

हुसेनीअलम रोड़, हैदराबाद (दक्षिन).

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री
सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली

दूसरी बार : मार्च १९४८
मूल्य
चार आना

मुद्रक
अमरचन्द्र
राजहंस प्रेस,
दिल्ली, ४-४८
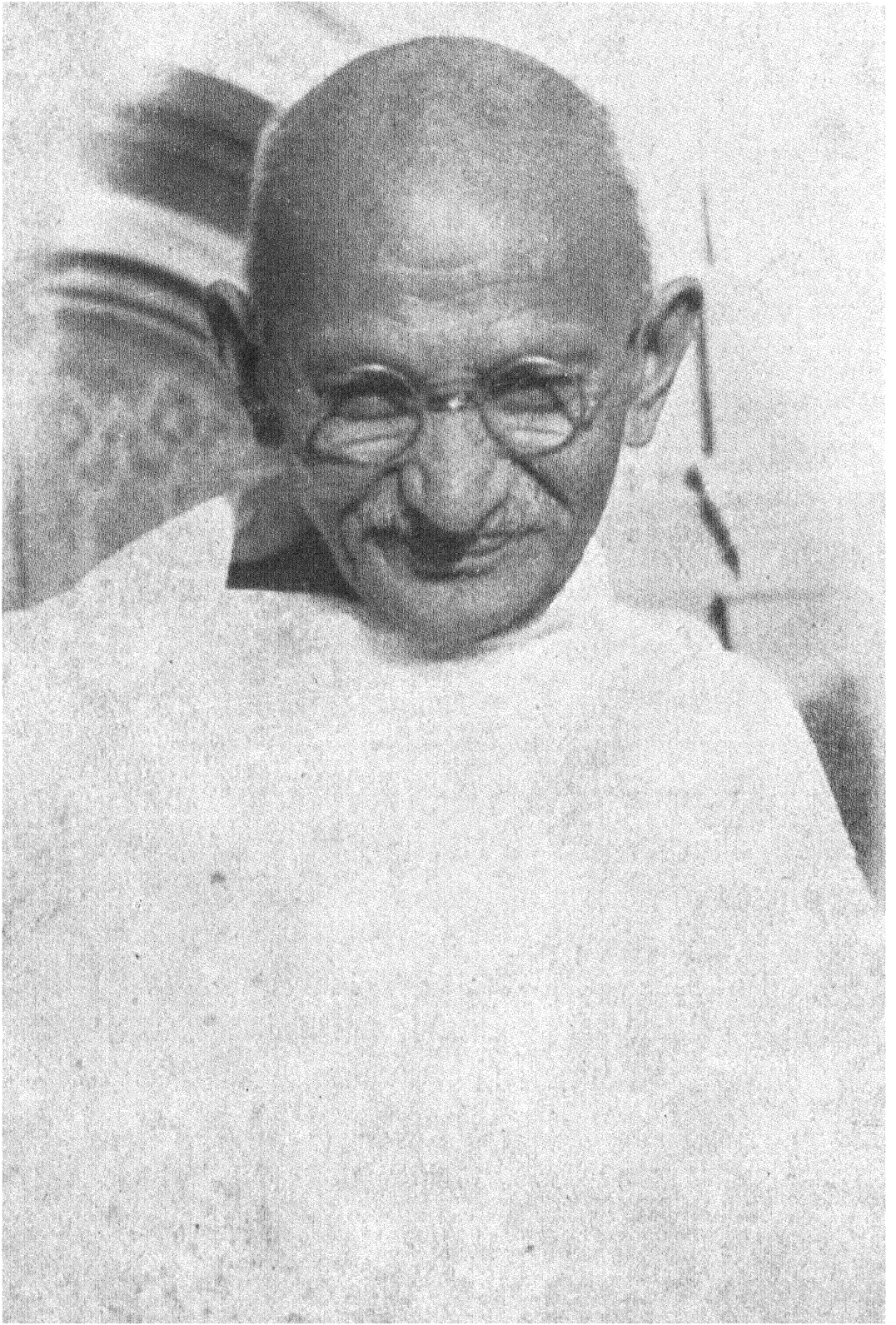
प्रकाशक की ओर से

महात्माजी का यह उपवास एक अप्रत्याशित घटना थी। लोगों को इतना तो पता था कि देश की अशांतिपूर्ण स्थिति के कारण महात्माजी अत्यन्त दुखित हो रहे हैं; लेकिन वे उपवास करने का निश्चय कर बैठेंगे, इसका किसी को भी अनुमान न था, यहां तक कि उनके संगी-साथी भी नहीं जानते थे। वस्तुतः गांधीजी की वेदना इतनी असह्य हो उठी थी कि उन्हें विवश होकर अपने अन्तिम अस्त्र का उपयोग करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

उपवास के इन पांच दिनों को हम हृदय-मंथन के दिन मानते हैं। बापूजी ने तो कहा ही है कि यह उपवास उन्होंने आत्म-शुद्धि के लिए किया था। देश-वासियों को भी इन दिनों अपना दिल टटोलने और अपनी भूल का परिमार्जन करने का अवसर मिला। महात्माजी के इस क़दम से भारत की राजधानी दिल्ली में पूर्ण शांति स्थापित हो गई, यह तो नहीं कहा जा सकता है; लेकिन इतना निर्विवाद है कि उससे यहां के वातावरण के शांत होने में बहुत कुछ सहायता मिली।

बापू के इन भाषणों का मुख्य सार यही है कि वैर से वैर शांत नहीं होता और प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

दिल्ली में शांति बनाये रखने के लिए जो महानुभाव गांधीजी के सामने वचन-बद्ध हुए हैं, उन पर तो सीधी जिम्मेदारी आ ही जाती है, साथ ही देश के जन-जन का कर्तव्य हो जाता है कि वह हर प्रकार से इन महानुभावों की सहायता करें। बापू का उपवास अवश्य समाप्त हो गया है; लेकिन सच्ची शांति उन्हें तभी मिलेगी जब भारत के ही नहीं, पाकिस्तान के भी कोने-कोने में शांति स्थापित हो जायगी।

बापू इस युग के महान् पुरुष हैं। उनके उपवास की सफलतापूर्वक समाप्ति पर हम उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और

आशा करते हैं कि जिस सदुद्देश्य के लिए उन्होंने अपनी जान की बाजी लगा दी थी, वह शीघ्र ही पूर्ण होगा।

स्थायी महत्त्व के होने के कारण हम इन भाषणों को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। विश्वास है, पाठक इन्हें ध्यान-पूर्वक पढ़ेंगे। अधिक-से-अधिक लोग इनसे लाभ उठा सकें इस विचार से इस पुस्तिका का दाम लागत से भी कम रखा गया है।

२५ जनवरी १९४८ —मंत्री

द्वितीय संस्करण

प्रथम संस्करण की पांच हज़ार प्रतियां छापी थीं, जो एक सप्ताह के भीतर हाथों-हाथ बिक गईं और पाठकों की मांग को देखकर हमें दूसरा संस्करण तत्काल निकाल देना पड़ा। कागज की कमी के कारण यह संस्करण भी बहुत कम प्रतियों का छापा गया है।

इस बीच बापूजी चले गये। पर उनके सिद्धान्तों और आदर्शों की ओर देशवासी जितने आज उन्मुख हुए हैं, उतने शायद ही पहले कभी हुए हों। बापू की रचनाओं और प्रवचनों में एक ऐसा कल्याणकारी सन्देश है, जो युग-युगान्तर तक हमारा मार्ग-प्रदर्शन करता रहेगा।

हमें विश्वास है कि पाठक मनोयोग-पूर्वक इन प्रवचनों के मनन और तदनुकूल आचरण द्वारा लाभ उठावेंगे। —मंत्री

१ मार्च १९४८

अनुक्रम

परिशिष्ट

हृदय-मंथन के पांच दिन

: १ :

उपवास का निर्णय

सेहत सुधारने के लिए लोग सेहत के कानूनों के मुताबिक उपवास करते हैं। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है तब प्रायश्चित्त के रूप में भी उपवास किया जाता है। इन उपवासों में उपवास करनेवाले को अहिंसा में विश्वास रखने की जरूरत नहीं, मगर ऐसा मौका भी आता है, जब अहिंसा का पुजारी समाज के किसी अन्याय के सामने विरोध प्रकट करने के लिए उपवास करने पर मजबूर हो जाता है। वह ऐसा तब ही करता है, जब अहिंसा के पुजारी की हैसियत से उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नहीं रह जाता। ऐसा मौका मेरे लिए आगया है।

जब ६ सितम्बर को मैं कलकत्ते से दिल्ली आया था तब मैं पश्चिमी पंजाब जा रहा था। मगर वहां जाना नसीब में नहीं था। खूबसूरत रौनक से भरी दिल्ली उस दिन मुर्दों के शहर के समान दीखती थी। जैसे ही मैं ट्रेन से उतरा, मैंने देखा कि हरेक के चेहरे पर उदासी थी। सरदार, जो हमेशा हंसी-मजाक करके खुश रहते हैं, वे उस उदासी से बचे नहीं थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नहीं था। वे स्टेशन पर मुझे लेने के लिए आये हुए थे। उन्होंने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि यूनियन की राजधानी में झगड़ा फूट निकला है। मैं फौरन समझ

गया कि मुझे दिल्ली में ही करना या मरना होगा। मिलटरी या पुलिस के कारण आज दिल्ली में ऊपर से शांति है, मगर दिल के भीतर तूफान उछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। इसे मैं अपनी करने की प्रतिज्ञा की पूर्ति नहीं समझता, जो ही मुझे मृत्यु से बचा सकती है—मृत्यु से, जिसके समान दूसरा मित्र नहीं, मुझे बचाने के लिए पुलिस और मिलटरी के द्वारा रखी हुई शांति ही बस नहीं। मैं हिन्दू, सिख और मुसलमानों में दिली दोस्ती रखने के लिए तरस रहा हूँ। कल तो ऐसी दोस्ती थी। आज उसका अस्तित्व नहीं है। यह ऐसी बात है कि जिसको कोई हिन्दुस्तानी देशभक्त (जो इस नाम के लायक है) शांति से सहन नहीं कर सकता।

मेरे अन्दर से आवाज तो कई दिनों से आ रही थी, मगर मैं अपने कान बन्द कर रहा था। मुझे लगता था कि कहीं यह शैतान की यानी मेरी कमजोरी की आवाज तो नहीं है! मैं कभी लाचारी महसूस करना पसन्द नहीं करता। किसी सत्याग्रही को नहीं करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरों की तलवार की जगह लेता है।

जो मुसलमान भाई मुझ से मिलते रहते हैं उनके इस सवाल का कि 'वे अब क्या करें' मेरे पास कोई जवाब नहीं। कुछ समय से मेरी यह लाचारी मुझे खाये जारही है। उपवास शुरू होते ही यह मिट जायगी। मैं पिछले तीन दिन से इस बारे में विचार कर रहा हूँ। आखिरी निर्णय बिजली की तरह मेरे सामने चमक गया है और मैं खुश हूं। कोई भी इन्सान, जो पवित्र है, अपनी जान से ज्यादा कीमती चीज कुरबान नहीं कर सकता। मैं आशा रखता हूं और प्रार्थना करता हूँ कि मुझ में उपवास करने के लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नींबू के साथ या इन चीजों के बगैर पानी पीने की मैं छूट रखूंगा। उप-

वास कल सुबह पहले खाने के बाद शुरू होगा।

उपवास का अर्सा अनिश्चित है और जब मुझे यकीन हो जायगा कि सब कौमों के दिल मिल गये हैं और वह बाहर के दबाव के कारण नहीं मगर अपना-अपना धर्म समझने के कारण तब मेरा उपवास छूटेगा।

आज हिंदुस्तान का मान सब जगह कम हो रहा है। एशिया के हृदय पर और उसके द्वारा सारी दुनिया के हृदय पर हिन्दुस्तान का रामराज्य आज तेज़ी से गायब हो रहा है। अगर इस उपवास के निमित्त हमारी आंख खुल जाय तो यह सब वापिस आजायगा। मैं यह विश्वास रखने का साहस करता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान की आत्मा खो गई तो तूफानों से दुःखी और भूखी दुनिया की आशा की आंख की किरण का लोप हो जायगा!

कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई हैं तो—मुझ पर गुस्सा न करें। कई ऐसे मित्र हैं, जो मनुष्य-हृदय को सुधारने के लिए उपवास का तरीका ठीक नहीं समझते। वे मेरी बर्दाश्त करेंगे और जो आजादी अपने लिए चाहते हैं, वह मुझे भी देंगे। मेरा सलाहकार एक-मात्र ईश्वर है। मुझे किसी और की सलाह के बिना यह निर्णय करना चाहिए। अगर मैंने भूल की है और मुझे उस भूल का पता चल जाता है तो मैं सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूंगा और अपना कदम वापस लूंगा। मगर ऐसी संभावना बहुत कम है। अगर मेरी अंतरात्मा की आवाज स्पष्ट है, और मैं दावा करता हूं कि ऐसा है, तो उसे रद नहीं किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस बारे में दलील न की जाय और जिस निर्णय को बदला नहीं जा सकता, उसमें मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिन्दुस्तान पर या कम-से-कम दिल्ली पर, ठीक असर हुआ तो उपवास जल्दी भी

छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देर से छूटे या कभी भी न छूटे, ऐसे नाजुक मौके पर किसी को कमजोरी नहीं दिखानी चाहिए।

मेरे जीवन में कई उपवास आये हैं। मेरे पहले उपवासों के वक्त टीकाकारों ने कहा है कि उपवास ने लोगों पर दबाव डाला और अगर मैं उपवास न करता तो जिस मकसद के लिए मैंने उपवास किया, उसके स्वतन्त्र गुण-दोष के विचार से निर्णय विरुद्ध जाने वाला था। अगर यह साबित किया जा सके कि मकसद अच्छा है तो विरुद्ध निर्णय की क्या कीमत है? शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्मपालन की तरह है। उसका फल अपने आप मिल जाता है। मैं कोई परिणाम लाने के लिए उपवास नहीं करना चाहता। मैं उपवास करता हूँ, क्योंकि मुझे करना ही चाहिए।

मेरी सबसे यह प्रार्थना है कि वे शांत चित्त से इस उपवास का तटस्थ वृत्ति से विचार करें और यदि मुझे मरना ही है तो मुझे शांति से मरने दें। मैं आशा रखता हूं कि शांति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिन्दुस्तान का, हिन्दू धर्म का, सिख धर्म का और इस्लाम का बेबस बनकर नाश होते देखना इसकी निस्बत मृत्यु मेरे लिए सुन्दर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तान में दुनिया के सब धर्मों के लोगों को समान हक न मिलें, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तान की नकल करे तो दोनों का नाश निश्चित है। उस हालत में इस्लाम का तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ही नाश होगा—बाकी दुनिया में नहीं—मगर हिन्दू धर्म और सिख धर्म तो हिन्दुस्तान के बाहर है ही नहीं।

जो लोग दूसरे विचार रखते हैं, वे मेरा जितना भी कड़ा विरोध करेंगे, उतनी मैं उनकी इज्जत करूंगा। मेरा उपवास

लोगों की आत्मा को जाग्रत करने के लिए है, उसे मार डालने को नहीं। जरा सोचिए तो सही, आज हमारे प्यारे हिन्दुस्तान में कितनी गन्दगी पैदा हो गई है। तब आप खुश होंगे कि हिन्दुस्तान का एक नम्र पूत, जिसमें इतनी ताकत है, और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गन्दगी को मिटाने के लिए ऐसा कदम उठा रहा है, और अगर उसमें ताकत और पवित्रता नहीं है तब वह पृथ्वी पर बोझ रूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाय और हिन्दुस्तान को इस बोझ से मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सबके लिए अच्छा है। मेरे उपवास की खबर सुनकर लोग दौड़ते हुए मेरे पास न आवें। सब अपने आस-पास का वातावरण सुधारने का प्रयत्न करें तो बस है।

नई दिल्ली, (मौनवार) १२ जनवरी १९४८

: २ :

पहला दिन

भाइयो और बहनो,

मेरी उम्मीद है कि मैं पंद्रह मिनट में जो कहना है, कह सकूँगा। बहुत कहना है, इसलिए शायद कुछ ज्यादा समय भी लगे।

आज तो मैं यहाँ (प्रार्थना-सभा में) आ सका, क्योंकि जब कोई फाका करता है तब पहले दिन—चौबीस घंटे तक—तो किसी को कुछ लगना न चाहिए। मैंने तो आज साढ़े नौ बजे खाना शुरू किया। उसी समय लोग आते रहे, बात करते रहे तो खाना ग्यारह बजे पूरा कर सका। सो आज के दिन की तो कीमत नहीं। इसलिए आज प्रार्थना-सभा में आ सका हूं तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। आज तो आ-जा सकता हूं, बैठ सकता हूं और सब काम भी किया है। कल से डर है।

मैं यहां आऊं और फिर न बोलूं। इससे अच्छा तो वहीं पड़ा रहकर विचार कर सकता हूँ। आखिर भगवान् का नाम लेना है तो वहीं लूंगा। कल से आपके सामने प्रार्थना में आना मेरे लिए मुश्किल मालूम होता है। मैं आना चाहूं और न आ सकूं; लेकिन प्रार्थना आप सुनना चाहते हैं तो आप आ सकते हैं। लड़कियां तो प्रार्थना करने आयंगी—सब नहीं तो एक आ जायगी तो आप प्रार्थना तो कर सकते हैं। मेरे यहां आने की आशा से तो आपको निराशा हो सकती है।

मैंने उपवास किया तो है, लेकिन कई पूछते हैं कि आप क्या कर रहे हैं? मुसलमान ने गुनाह किया, हिन्दू ने गुनाह किया या सिख ने गुनाह किया? किसने गुनाह किया? फाका कब तक चलनेवाला है? ठीक है, जो पूछते हैं कि क्या इल्जाम हम पर है? मैं कहता हूँ कि इल्जाम किसी पर नहीं है। मैं इल्जाम लगानेवाला कौन हूं? हां, मैंने सुनाया तो है कि हम गुनहगार बन गए हैं, लेकिन कोई एक आदमी गुनहगार थोड़ा है! हिंदू मुसलमान को हटाते हैं तो अपने धर्म का पालन नहीं करते और आज तो हिंदू और सिख दोनों साथ करते हैं, लेकिन मैं सब हिन्दुओं या सब सिखों पर भी इल्जाम नहीं लगाता हूं; क्योंकि सबने थोड़े किया। यह समझने लायक बात है। न समझें तो मेरा काम नहीं होगा और फाका भी बन्द नहीं होगा। अगर मैं अपने को जिन्दा नहीं रख सका तो इसका इल्जाम किसी पर नहीं है। मैं नालायक सिद्ध होता हूं तो ईश्वर उठा लेगा। मुझको उठा ले तो कौन-सी बड़ी बात है? तो मुझसे पूछते हैं कि इसका मतलब यह हुआ कि तुम मुसलमान भाई के लिए करते हो। ठीक कहते हैं। मैं कबूल करता हूँ कि मैंने उनके लिए तो किया। क्यों? क्योंकि आज मुसलमान यहां तेजी खो बैठे हैं—हुकूमत का एक किस्म का सहारा था कि इतनी

जगह मुसलमानों की है, मुस्लिम लीग की भी यहां चलती है, वह अब रही नहीं। आज यहां मुस्लिम लीग नहीं रही, मुस्लिम लीग का सहारा सच्चा नहीं है—पीछे लड़ाई करते हैं, यह बात दूसरी है—बाकी उनकी हुकूमत नहीं रही। लीग ने दो टुकड़े करवा दिये। इसीलिए दो हिस्से बन गए। इसके बाद भी मुसलमान यहां रहते हैं। मेरा तो हमेशा ऐसा मत रहा है कि जो थोड़े रहते हैं, उनकी मदद की जाय। ऐसा करना मनुष्य-मात्र का धर्म है।

यह आत्म-शुद्धि का उपवास है तो सबको शुद्ध होना चाहिए। सबको शुद्ध होना ही नहीं है तो मामला बिगड़ जाता है। सबको शुद्ध होना है तो मुसलमान को भी होना है। सबको साफ़सुथरा और सिद्ध बन जाना है और मुसलमान कुछ भी करें, उनका कोई दोष नहीं निकालना है। आत्म-शुद्धि का उपवास इस तरह से नहीं हो सकता। अगर मैं कहूँ कि मैंने किसी के सामने गुनाह किया तो वह प्रायश्चित है। जिसके सामने हम गुनाह कबूल करते हैं वह प्रायश्चित्त है।

मैं जब कहता हूं तब मुसलमान की खुशामद करने या किसी और दूसरे की खुशामद करने के लिए नहीं कहता हूँ। मैं तो अपने को राजी रखना चाहता हूं। इसका मतलब यह है कि मैं ईश्वर को राजी रखना चाहता हूं। मैं ईश्वर का गुनहगार नहीं बनना चाहता। मैं तो कहूंगा कि मुसलमान को भी शुद्ध बनना है और यहां रहना है। बात ऐसी है कि चुनाव में—सही हो या गलत—हिन्दू-सिख ने मुस्लिम लीग को मान लिया, उसके पहले भी मानते थे और कहते भी थे। मैं उसके इतिहास में नहीं जाऊंगा। इसके बाद देश के हिस्से हो गये—उसके पहले दिल के हिस्से हो गये। उसमें मुसलमानों ने भी गलती की। सब गलती उन्हीं की थी, ऐसी बात नहीं है। हिंदू, सिख, मुसलमान—

तीनों गुनहगार थे। अब तीनों गुनहगारों को दोस्त बनना है। इन तीनों के बीच में एक चीज पड़ी है। वह है : ईश्वर को सब मानें, शैतान को नहीं, तो यह काम बन सकता है। मुसलमान भी काफी पड़े हैं, जो शैतान की पूजा करते हैं, खुदा की नहीं। काफी हिन्दू भी शैतान और राक्षस की पूजा करते हैं, सिख भी गुरु नानक और दूसरे गुरुओं की पूजा नहीं करते—ऐसे हम बन गये हैं। हम तो धर्म के नाम पर अधर्मी बन गए। अगर हम तीनों धर्म-पथ पर चलें तो किसी एक को डरने की आवश्यकता नहीं है।

मैंने मुसलमानों के नाम से उपवास शुरू किया है, इसलिए उनके सिर पर जबरदस्त जिम्मेदारी आती है। क्या जिम्मेदारी आती है ? उनको यह समझना है कि हम हिन्दू सिख के साथ भाई-भाई बनकर रहना चाहते हैं, इसी यूनियन के हैं—पाकिस्तान के नहीं सही—हम वफ़ादार बनकर रहना चाहते हैं। मैं यह नहीं पूछता हूँ कि आप वफादार हैं या नहीं ? पूछकर क्या करना है ! मैं तो कामों से देखता हूं।

पीछे सरदार का नाम आ जाता है। वे कहते हैं कि सरदार को हटा दो, तुम अच्छे हो। पीछे सुनाते हैं कि जवाहर भी अच्छा है। तुम हुकूमत में आ जाओ तो हुकूमत अच्छी चले। सब अच्छे हैं, सरदार अच्छे नहीं हैं। तो मैं मुसलमानों से कहूंगा कि मुसलमान ऐसा कहेंगे तो कोई बात चलनी नहीं है। क्यों नहीं ? क्योंकि आपका हाकिम वह मंत्रिमंडल है। हुकूमत में न अकेला सरदार है और न जवाहर है। वे आपके नौकर हैं। उनको आप हटा सकते हैं। हां, ऐसा है कि सिर्फ मुसलमान तो हटा नहीं सकते हैं, लेकिन इतना तो करें कि सरदार जितनी गलती करते हैं—लोगों में आपस-आपस में बात करने से निपटता नहीं है--उनको बताओ। ऐसा नहीं कि उन्होंने यह बात

कही, वह बात कहो; लेकिन उन्होंने किया क्या, यह बताओ, मुझको बता दो। उनसे मैं मिलता रहता हूँ और सुनता भी हूं तो मैं कह दूंगा। वही जवाहर, वही सरदार दोनों हुकूमत चलाते हैं। जवाहर तो उनको निकाल सकते हैं, लेकिन ऐसा नहीं करते हैं तो कुछ है। वे उनकी तारीफ करते हैं। फिर मंत्रि-मंडल है, वह हुकूमत है। सरदार जो कुछ करता है उसके लिए सारी हुकूमत जवाबदार है। आप भी जवाबदार हैं; क्योंकि वे आपके नुमाइंदे हैं। इस तरह से हमारा काम चलता है। इसलिए मैं कहूंगा कि मुसलमानों को बहादुर, निर्भय बनना है। उसी के साथ खुदा-परस्त बनना है। वे ऐसा समझें कि हमारे लिए लीग नहीं है, कांग्रेस नहीं है, गांधी नहीं है, जवाहर नहीं है, कोई नहीं है। खुदा है। उसके नाम पर हम यहां पड़े हैं। मैं चाहता हूँ कि हरएक मुसलमान इस तरह का बने। हिन्दू, सिख चाहे कुछ भी करते हैं, आप बुरा न मानें। मैं आपके साथ पड़ा हूं। मैं आपके साथ मरना या जिन्दा रहना चाहता हूं। मैं मरने की क्या कोशिश करनेवाला हूं? मैं करूंगा या मरूंगा। अगर मैं आप लोगों को साथ नहीं रख सकता हूं तो मेरा जीना निकम्मा बन जाता है। इसलिए मुसलमान पर बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। इसे आप भूलें नहीं। ऐसी बात नहीं करता कि मैं मुसलमान की गलती न निकालूं। क्यों न निकालूं?

सरदार सीधी बात बोलनेवाले हैं। वे बोलते हैं तो कड़वी लगती है। वह सरदार की जीभ में है। मैंने उनसे कहा कि आपकी जीभ से कोई बात निकली कि काटा। तो उनकी जीभ ही ऐसी है कि कांटा है, दिल वैसा नहीं है। उसका मैं गवाह हूं। उन्होंने कलकत्ते में कह दिया, लखनऊ में कह दिया कि सब मुसलमानों को यहां रहना है, रह सकते हैं। साथ ही मुझको यह भी कहा कि उन मुसलमानों का एतबार नहीं करता

हूं, जो कल तक लीग वाले थे और अपने को हिंदू सिख का दुश्मन मानते थे—वे जब कल तक ऐसे थे तब आज एक रात में दोस्त कैसे बन सकते हैं ? पीछे ऐसा है कि लीग रहेगी तो वे लोग किसकी मानेंगे—हमारी हुकूमत की या पाकिस्तान की ? लीग अभी भी वैसा ही कहती है तो उनको शक होता है। उनको शक करने का अधिकार है, सबको शक करने का अधिकार है। सरदार ने जो कहा है उसका सीधा अर्थ निकाल लें तो काम बन जाता है। जैसे कोई मेरा भाई है, लेकिन उस पर शक है तो क्या करूं। शक साबित हो तब काटूं, यही मैं कर सकता हूं, लेकिन मैं पहले से ही भाई की बुराई करूं, ऐसा कैसे हो सकता है ? वे कहते हैं कि हमारे दिल में आज मुस्लिम लीग के मुसलमानों के बारे में एतबार नहीं है, उन पर कैसे भरोसा रखें ? मुसलमान सबूत दें कि वे ऐसे नहीं हैं। ऐसा करें तो सब अंजाम पहुंच जाता है। पीछे मुझे यह कहने का हक मिल जाता है कि हिन्दू सिख क्या करें। इस यूनियन में सरदार क्या करें, जवाहर क्या करें, उसमें कोई भी क्या करें, मैं क्या करूं ?

इन लड़कियों ने अभी जो गीत सुनाया है वह गुरुदेव का प्रसिद्ध गीत है। नोआखाली में पैदल चलते थे तब इस गीत[1] को गाते थे। उसमें एक बात है। अकेला जब कोई आदमी चलता है तो किसी को कैसे बुलाते हैं : आओ ऐ भाई, आओ ऐ भाई, मदद तो दे दो। कोई नहीं आता है, अंधेरा है तो गुरुदेव कहते थे कि अकेला चले तो भी क्या, क्योंकि उसका एक साथी—ईश्वर तो साथ है ही। मैंने आज लड़कियों से इस गीत को गाने को कहा तो गा दिया, नहीं तो यहां बंगाली गीत क्या गाना था ! हिन्दुस्तानी चलता था। उसमें बड़ा गुण पड़ा है।

[1] देखिये परिशिष्ट नं० ५।

तो मैंने कहा कि आज इसे गाओ। गुरुदेव का यह प्रिय भजन है। तो मैं कहूंगा कि अगर हिंदू सिख ऐसा नहीं बनते हैं तो सच्चे नहीं हैं। उनमें इतनी बहादुरी नहीं होती है कि थोड़े वालों को भी नहीं रहने दोगे—क्या मारोगे-पीटोगे—मारोगे नहीं, पीटोगे नहीं, लेकिन ऐसी हवा पैदा कर दो कि सब मुसलमान जाने को मजबूर हो पाकिस्तान जायं, तो काम कैसे बन सकता है? इसलिए कहता हूँ कि हिंदू-सिख को यहां तक बहादुर बनना है कि पाकिस्तान में मुसलमान चाहे कुछ भी करें, चाहे सभी हिन्दू और सिखों को मार डालें तो भी यहां ऐसा न हो। मैं वहां तक जिन्दा रहना नहीं चाहता कि पाकिस्तान की नकल हो। मैं जिन्दा रहूंगा तो सब हिंदू-सिख को कहूंगा कि एक भी मुसलमान को न छूवें, एक भी मुसलमान को मारना बुजदिली है। हमें तो यहां बहादुर बनना है, बुजदिल नहीं।

फाका छूटने की शर्त यह है कि दिल्ली बुलन्द हो जाय। अगर दिल्ली बुलन्द हो जाती है तो सारे हिन्दुस्तान ही क्या, पाकिस्तान पर भी असर पड़ेगा। अगर दिल्ली ठीक हो जाती है और यहां कोई मुसलमान भी अकेला घूम सकता है तो मेरा फाका छूट जाता है। इसका मतलब यह है कि दिल्ली पायातख्त है। सब दिन यह हिन्दुस्तान का पायातख्त रही है। दिल्ली में सब ठीक नहीं होता है तो सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तान में ठीक नहीं हो सकता। यहां कहें कि हम भाई-भाई बन गये हैं, यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख सब एक-दूसरे से मिलते-जुलते हैं। पीछे चाहे सुहरावर्दी साहब हों—गुंडों के सरदार माने जाते हैं तो उससे मुझको क्या—अब वह गुंडा बनें तो गोली से उड़ा दें। सुहरावर्दी को मैं यहां क्यों नहीं लाता हूं? क्योंकि डर है कि उनका कोई अपमान न कर दे। अगर कोई उनका अपमान करता है तो मेरा भी अपमान होगा। आज ऐसा थोड़ा है कि वे दिल्ली

की गलियों में घूम सकते हैं। घूमेंगे तो काट डाले जायंगे। मैं तो कहूंगा कि उन्हें अंधेरे में भी घूमने की आजादी रहनी चाहिए। ठीक है कि कलकत्ते में मुसलमानों पर आ पड़ी तो किया, लेकिन बिगाड़ना चाहते तो बिगाड़ सकते थे—वे बिगाड़ना नहीं चाहते थे। कलकत्ते में जिस चीज पर मुसलमान कब्जा लेकर बैठ गये थे उनको उन्होंने खींच-खींच कर निकाला और कहा कि मैं प्रधान मंत्री था, ऐसा कर सकता हूं। मुसलमानों ने जिन पर कब्जा किया था वह हिंदुओं और सिखों का था तो भी उन्होंने किया। तो मैं कहूंगा कि यहां असली शांति के लिए एक दिन के बदले एक महीना लगे तो क्या मेरा उपवास बीच में ही छुड़वाने के लिए कोई ऐसा काम न करे। इससे सारा हिंदुस्तान तो बच जाता है। आज तो गिरा हुआ है। ऐसा करें तो हिंदुस्तान ऊंचा जानेवाला है।

तो मैं यही चाहता हूं कि हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान जो हिंदुस्तान में पड़े हैं, यहीं रहें। हिंदुस्तान ऐसा बने कि किसी के जान-माल को नुकसान न पहुंचे। तब हिंदुस्तान ऊंचा होगा।

नई दिल्ली, १३ जनवरी १९४८.

: ३ :

दूसरा दिन

भाइयो और बहनो,

कल तो मैंने आपको बताया था कि आज मैं यहां आ सकूंगा या नहीं, इसमें शक है। होसका तो आज आ गया। कल-परसों ऐसे दिन आनेवाले हैं कि मैं घूम नहीं सकूंगा। डाक्टर तो ऐसे हैं कि आज से ही मनाही करते हैं, लेकिन मैं तो डाक्टरों के हाथ में नहीं हूं, ईश्वर के हाथ में पड़ा हूं। मुझे ऐसा मोह नहीं है कि

जिन्दा रहूं तो ठीक है। जिन्दा रखेगा तो वही रखेगा और मारेगा तो वही मारेगा। मेरी प्रार्थना है कि मेरी अटल श्रद्धा कायम रहे और उम्मीद करता हूं कि उस श्रद्धा में कोई विघ्न न डाले। आज ऐसा हो गया है कि आदमी दुर्बल पड़ा है। कहता है कि ईश्वर कहां है? ऐसे दुर्बल आदमी पड़े हैं। तो मैं कहता हूँ कि सब सबल बनें, इर्द-गिर्द सबल बनें। तभी आदमी आपत्ति से निकल सकता है। तो मैंने अपनी रामकहानी कह दी।

मैं तो आज आपको दो-चार चीज कह देना चाहता हूं। सचमुच मैंने अंग्रेजी में तो लिख डाला है या लिखा दिया है। पीछे ऐसा था कि दिल कैसे चलेगा। नहीं जानता था। ताकत नहीं हो तो तर्जुमा करके सुना देंगे। ऐसा हो सकता था। पीछे मैंने सोचा कि मैं सुना दूं तो अच्छा है। यह आपके लिए ही नहीं है। इसे रेडियो के जरिये सारे हिंदुस्तान के लाखों आदमी सुन लेते हैं। वे सुनना चाहते हैं कि मैं क्या कहता हूं, मेरी आवाज कैसी है। मैं तो प्रेम के बस में हूं। तो मुझको लगा कि आज भी मेरी आवाज सुन लें तो अच्छा है। मैं ऐसा मानता हूं कि ३६ घंटे का उपवास तो काम की चीज है—शरीर को स्वच्छ करता है। इतने से हानि किसी को नहीं पहुंचती है। हां, यह ठीक है कि भविष्य के लिए ताकत को इट्ठा रखना है, लेकिन वह तो भगवान् करा लेगा।

मेरे पास काफी तार आये हैं, मुसलमानों के भी काफी तार आये हैं, हर जगह से। हिन्दुस्तान के बाहर के भी काफी तार आये हैं। तो मैंने प्यारेलाल को कह दिया कि उनमें से काम के निकालो। सबको छपवाना थोड़े है! उससे फायदा क्या? कितने ही ऐसे तार आये हैं। एक किस्म के तार तो ऐसे हैं कि जिनमें से लोगों को शिक्षा मिलेगी। ऐसे भी तार हैं कि हम सब कर लेंगे, उपवास छोड़ दो। उपवास ऐसे कोई छुट सकता है! ईश्वर

ने करवाया है, ईश्वर ही छुड़वा सकता है। दूसरी कोई ताकत नहीं। वह ताकत तो वही है जो मैंने लिखा है।

मृदुला बेन का टेलीफोन आया। वह तो लाहौर में पड़ी है। उसके काफी मुसलमान दोस्त हैं। वह हिंदू लड़की है। वह तो व्याकुल बन गई है। छोटी थी तब से मेरी गोद में पड़ी थी। अब तो बड़ी हो गई है। हर जगह घूमती है—अकेली। तो कहती है कि सब मुसलमान मुझसे पूछते हैं, अफसर भी पूछते हैं—गांधी जो कर रहे हैं वह हमारे लिए कर रहे हैं तो पूछो—क्या हमको बता देंगे कि हमसे क्या उम्मीद रखते हैं? मुझको यह अच्छा लगा। तो उत्तर देने के लिए कहे देता हूँ। टेलीफोन वहां पहुँचा या नहीं, एक रात में क्या होगा, कल तो वहां यह पहुंच ही जायगा। और जो तार भेजते हैं उनको कहूंगा कि यह कौन-सी बड़ी बात है कि आप मेरे बारे में पूछते हैं? पूछने की क्या जरूरत है? यह दिल्ली का यज्ञ तो है, लेकिन सारे देश के लिए भी है। यह यज्ञ अकेले के लिए है या सबके लिए, ऐसा सवाल ही नहीं है।

यह उपवास आत्म-शुद्धि करने के लिए है। जहां आज शैतान बैठा है वहां ईश्वर को बैठा दो और ऐसा बैठा दो कि शैतान उसे हटा न सके। तो उसकी कुछ निशानी होनी चाहिए। इसके लिए सब तो फाका कर नहीं सकते। यह मेरे शुभ नसीब में है। सबको ऐसा नसीब मिले तो सब प्रेम से चलें। हिन्दू कहता है कि मुसलमान को मारो, मुसलमान हिन्दू को मारने के लिए तैयार होता है, और सिख कहता है कि मुसलमान को मार डालो। इस तरह सिख, हिन्दू, मुसलमान झगड़ा करें तो बुरी बात है। यज्ञ में हिस्सा लेना है, लेना चाहते हैं तो सब भाई-भाई बन जायं, वैर-भाव के बदले प्रेम-भाव करें। हिन्दू मुस्लिम, सिख—सब ऐसा बनें तो उस जगह शराब नहीं देखूंगा, अफीम

नहीं देखूंगा, व्यभिचारी लोगों को नहीं देखूंगा, व्यभिचारिणी औरतों को नहीं देखूंगा। सब ऐसा समझेंगे कि यह मेरी बहन है या मां है या पत्नी है या लड़की हैं। सब परहेज से रहें, साफ-सुथरे रहें तो भी अगर मैं समझूं कि मैं पाकिस्तान का दुश्मन हूं, पाकिस्तान पाप से भरा है तो मुझे प्रायश्चित्त करना होगा और कहना होगा कि पाकिस्तान पाप-भूमि नहीं, पाक-भूमि है। ऐसा बनना है तो अच्छा है। कहने से नहीं बने, करने से बने। पाकिस्तान में जितने मुसलमान पड़े हैं वे ऐसे रहें तो इसका असर इधर भी होगा। पाकिस्तान ने हिन्दुओं के साथ गुनाह किया है, यह मैंने कभी छिपाया नहीं है।

अभी कराची में क्या हो गया? बेगुनाह सिख मार डाले गये, जायदाद लूट ली गई। अब सुनता हूं कि गुजरात में भी हो गया। वे बेचारे बन्नू से या कहां से मुझको पता नहीं आ रहे थे। सब शरणार्थी थे। वहां से जान बचाने के लिये भाग रहे थे यहां आने के लिए। रास्ते में काट डाले गये। मैं सब किस्सा नहीं कहना चाहता हूं। मैं मुसलमानों को कहता हूँ कि आपके नाम से पाकिस्तान में ऐसा बनता रहे तो पीछे हिन्दुस्तान के लोग कहां तक बर्दाश्त करेंगे? मेरी तरह सौ आदमी भी फाका करें तो भी नहीं रुक सकता है। मेरे जैसे मिसकिन के फाका करने से क्या होगा? तो आप ऐसा करें कि सब अच्छे बन जायं। कोई मुसलमान हो, कबीलेवाले हों तो उनको भी अच्छा बनना है। और कहें कि हम सब सिख-हिन्दू को यहां लानेवाले हैं।

कवि ने कहा—मैंने यह पढ़ा है कि अगर आपको जन्नत देखना है, तो यहां है, बाहर नहीं है। वह तो एक बगीचे के लिए कहा है। लिखनेवाले उस्ताद रहते हैं, क्या खूबसूरत चीज है। यह उर्दू में लिखा है। मैंने इसे वर्षों पहले—बचपन में पढ़ा था। जन्नत ऐसे आता नहीं है। अगर हिन्दू, मुस्लिम, सिख—

सब ऐसे शरीफ बनें, सब-के-सब भाई-भाई बनें तो कहूंगा कि वही शेर सब दरवाजे में लगाये जायं। पीछे कहूंगा कि वहीं नहीं, यहां भी लगाये जायं। लेकिन कब लगाया जायगा, जब पाकिस्तान पाक हो जायगा। कहना एक और करना दूसरा तो दोजख हो जायगा। दिल को साफ कर लो, उसमें शैतान नहीं, खुदा को विराजमान करो। ऐसा करोगे तो जन्नत यहीं है। जन्नत देखना हो तो वहां देखो। अगर वहां ऐसा हो जाय तो हम यहां मुकाबला करेंगे और उससे भी आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे। हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हैं तो क्या, दिल तो एक हो गया है। भूगोल में टुकड़े रहें तो क्या हुआ, हुकूमत अलग है तो उससे क्या! सारी दुनिया में हुकूमत अलग-अलग हैं। हुकूमत पचास रहें, पांच-सौ रहें तो क्या! मैं तो कहूंगा कि सात लाख गांव हैं तो सात लाख हुकूमत बनी ऐसा मानो, तो वह छोटी होगी, अच्छी रहेगी। पीछे देहातों का काम बहनें पड़ी हैं उनके हाथ छोड़ सकते हैं। यह ऐसी खूबसूरत चीज है।

मुझसे कहते हैं—कहते-कहते घूंट पी लेते हैं—कि यह पागल है। एक छोटी-सी चीज को लेकर फाका कर लेता है; लेकिन मैं क्या करूं? मैं बचपन से ऐसा बना हूं। जब छोटा था तब अखबार भी नहीं पढ़ता था। मैं सच कहता हूं कि अखबार नहीं पढ़ता था। मैं अंग्रेजी मुश्किल से पढ़ सकता था, गुजराती भद्दी जानता था तो मैं अखबार कैसे पढ़ सकता था? तब से मेरा खयाल रहा है कि सारे हिंदुस्तान में—राजकोट में ही नहीं—हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान एक बनकर रहें तो पीछे हम यहां आराम से रह सकते हैं। मेरा ऐसा ख्वाब रहा है। अभी जो स्वराज आया है, वह निकम्मा है। जवानी में मैंने जो ख्वाब देखा है वह अगर सच्चा होता है—मैं तो बूढ़ा हो गया हूं, मरने के किनारे हूँ—तो मेरा दिल नाचेगा, बच्चे

नाचेंगे और देखेंगे कि हिन्दुस्तान में सब खैर हो गया, लड़ते-भिड़ते नहीं, साथ रहते हैं। आप सब इस काम में मदद करें। पाकिस्तान के लोग सुनेंगे तो वे भी नाच उठेंगे। सिख, हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई, सब भूल जायं कि हम दुश्मन थे, अलग-अलग थे। अगर हम अपने-अपने धर्म में कायम रहें और अच्छे बनें तो सब धर्म एक साथ चल सकता है। पीछे धर्म नहीं देखेंगे, शरीफ रहेंगे। इस तरह से दोनों हिन्दुस्तान बन जाय तो मैं नाचूंगा। आपको भी नाचना पड़ेगा। वह तो एक नशा है—ईश्वर ऐसा नशा देगा और हमें किसी का डर नहीं रहेगा। हम ऐसे नहीं डरनेवाले हैं कि यह सिख है या ऊँचा पठान है। हमें तो सिर्फ ईश्वर से डरना है। मैं ऐसा देखना चाहता हूँ।

आप अपने को ऐसा बना सकते हैं। समाज क्या है ? आप सबसे समाज बना है। हम उसमें हैं तो समाज बनता है। समाज हमको नहीं बनाता है। हम उसको बनाते हैं। हम सोए हुए पड़े हैं। इसलिए कहते हैं कि समाज ऐसा है और हम समाज से लाचार हैं। उसी तरह हुकूमत है। हुकूमत तो हम हैं। एक आदमी ऐसा कर सकता है। एक है तो अनेक बनेगा, एक नहीं तो शून्य है।

आपको पता नहीं था कि मैं आज बोलूंगा। कल आने में शक है; लेकिन प्रार्थना होगी और लड़कियाँ भजन सुनायंगी।

नई दिल्ली, १४ जनवरी १९४८

: ४ :

तीसरा दिन

[बिस्तर पर लेटे-लेटे दिया गया प्रवचन]

भाइयो और बहनो,

मेरे लिए यह एक नया अनुभव है। मुझको इस तरह से

लोगों को सुनाने का कभी अवसर नहीं आया है, न मैं चाहता था। मैं इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है वहां नहीं जा सकता हूं। इसलिए प्रार्थना में जो लोग आये हैं वहां तक मेरी आवाज यहां से नहीं पहुंच सकती है। फिर भी मैंने सोचा कि आप लोगों तक, जिधर आप बैठे हैं, मेरी आवाज़ पहुँच सके तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझको बड़ा आनन्द होगा। जो मैंने लोगों के सामने कहने को तैयार किया है, वह तो लिखवा दिया था। ऐसी हालत कल रहेगी कि नहीं, मैं नहीं जानता।

आप लोगों से मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हरएक आदमी दूसरे क्या करते हैं उसे न देखें, बल्कि अपनी ओर देखें और जितनी आत्म-शुद्धि कर सकते हैं, करें। मुझे विश्वास है कि जनता बहुत परिमाण में आत्म-शुद्धि कर लेगी तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा। हिन्दुस्तान का कल्याण होगा और सम्भव है कि मैं जल्दी से उपवास जो चल रहा है उसे छोड़ सकूं। मेरी फिक्र किसी को नहीं करनी है, फिक्र अपने लिए की जाय। हम कहां तक आगे बढ़ रहे हैं और देश का कल्याण कहां तक हो सकता है, इसका ध्यान रक्खें। आखिर में सब इन्सानों को मरना है। जिसका जन्म हुआ है उसे मृत्यु से मुक्ति मिल नहीं सकती। ऐसी मृत्यु का भय क्या? शोक भी क्या करना? मैं समझता हूं कि हम सबके लिए मृत्यु एक आनन्ददायक मित्र है, हमेशा धन्यवाद के लायक है, क्योंकि मृत्यु से अनेक प्रकार के दुखों में से हम एक समय तो निकल जाते हैं।

[लिखित संदेश]

कल शाम की प्रार्थना के दो घंटे बाद अखबारवालों ने मुझे सन्देश भेजा कि उन्हें मेरे भाषण के बारे में कुछ बातें

पूछनी हैं। वे मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैंने दिन-भर काम किया था, प्रार्थना के बाद भी काम में फँसा रहा। इसलिए थकान और कमजोरी के कारण उन्हें मिलने की मेरी इच्छा नहीं हुई। इसलिए मैंने प्यारेलाल से कहा कि उनसे कहो कि मुझे माफ़ करें और जो सवाल पूछने हों वह लिखकर कल सुबह नौ बजे बाद मुझे दे दें। उन्होंने ऐसा ही किया है।

पहला सवाल यह है—"आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है जब कि यूनियन के किसी हिस्से में कुछ झगड़ा हो ही नहीं रहा।" लोग जबरदस्ती मुसलमानों के घरों का कब्जा लेने की बाकायदा, निश्चय-पूर्वक कोशिश करें, यह क्या झगड़ा नहीं कहा जायगा? यह झगड़ा तो यहां तक बढ़ा कि फौज को इच्छा न रहते हुए भी अश्रु गैस इस्तेमाल करनी पड़ी और भले ही हवा में हो, मगर कुछ गोलियां भी चलानी पड़ीं। तब कहीं लोग हटे। मेरे लिए यह सरासर बेवकूफी होती कि मैं मुसलमानों का ऐसे टेढ़ी तरह से निकाला जाना आखिर तक देखता रहता। इसे मैं रुला-रुला कर मारना कहता हूं।

दूसरा प्रश्न यह है—"आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डर की और अपनी असुरक्षितता की कहानी लेकर आपके पास आते हैं तो आप उन्हें कोई जवाब नहीं दे सकते। उनकी शिकायत है कि सरदार, जिनके हाथों में गृह-विभाग है, मुसलमानों के खिलाफ हैं। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आप की 'हां-में-हां' मिलाया करते थे, जी हजूर कह-लाते थे मगर अब ऐसी हालत नहीं रही। इससे लोगों के मन पर यह असर होता है कि आप सरदार का हृदय पलटने के लिए उपवास कर रहे हैं। आपका उपवास गृह-विभाग की नीति की निन्दा करता है। अगर आप इस चीज को साफ करेंगे तो अच्छा होगा।"

मैं समझता हूं कि मैं इस बात का साफ-साफ जवाब दे चुका हूं। मैंने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है, वह मेरी कल्पना में भी नहीं आया। अगर मुझे पता होता कि ऐसा अर्थ किया जा सकता है तो मैं पहले से इस चीज को साफ कर देता।

कई मुसलमान दोस्तों ने शिकायत की थी कि सरदार का रुख मुसलमानों के खिलाफ है। मैंने कुछ दुःख से उनकी बात सुनी मगर कोई सफाई पेश न की। उपवास शुरू होने के बाद मैंने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगाई हुई थी वह चली गई। इसलिए मैंने टीकाकारों को कहा कि सरदार को मुझ से और पंडित नेहरू से अलग करके और मुझे और पंडित नेहरू को खामख्वाह आसमान पर चढ़ा कर वे गलती करते हैं।

इससे उनको फायदा नहीं पहुंच सकता। सरदार के बात करने के ढंग में एक तरह का अक्खड़पन है, जिससे कभी-कभी लोगों का दिल दुःख जाता है, अगरचे सरदार का इरादा किसी को दुःखी बनाने का नहीं होता। उनका दिल बहुत बड़ा है। उसमें सबके लिए जगह है। सो मैंने जो कहा उसका मतलब यह था कि अपने जीवन-भर के वफादार साथी को एक बेजा इलजाम से बरी कर दूं। मुझे यह भी डर था कि सुनने वाले कहीं यह न समझ बैठें कि मैं सरदार को अपना 'जी हुजूर' मानता हूँ। सरदार को प्रेम से मेरा 'जी हुजूर' कहा जाता था। इस लिए मैंने सरदार की तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्ति-शाली और मन के मजबूत हैं कि वे किसी के 'जी हुजूर' हो ही नहीं सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे तब वे ऐसा कहने देते थे; क्योंकि जो कुछ मैं कहता था वह अपने आप उनके गले उतर जाता था। वे अपने क्षेत्र में बहुत बड़े थे। अहमदाबाद म्यूनिसिपैलिटी में उन्होंने शासन चलाने में बहुत काबलियत

बताई थी। मगर वह इतने नम्र थे कि उन्होंने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरू की। उन्होंने उसका कारण मुझे बताया था कि जब मैं हिन्दुस्तान में आया था, उन दिनों जिस तरह का राज-काज हिंदुस्तान में चलता था, उसमें हिस्सा लेने का उन्हें मन नहीं होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले आपड़ी तब उन्होंने देखा कि जिस अहिंसा को वे आज तक सफलतापूर्वक चला सके अब नहीं चला सकते। मैंने कहा है कि मैं समझ गया हूँ कि जिस चीज को मैं और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे वह सच्ची अहिंसा न थी। वह तो नकली चीज थी और उस का नाम है निष्क्रिय प्रतिरोध। हां, किन के हाथों में निष्क्रिय प्रतिरोध किसी काम की चीज है? जरा सोचिये तो सही कि एक कमजोर आदमी जनता का प्रतिनिधि बने तो वह अपने मालिकों की हंसी और बेइज्जती ही करवा सकता है। मैं जानता हूं कि सरदार कभी उन्हें सौंपी हुई जिम्मेदारी को दगा नहीं दे सकते। वे उसका पतन बर्दाश्त नहीं कर सकते। मैं उम्मीद करता हूं कि यह सब सुनने के बाद कोई ऐसा खयाल नहीं करेंगे कि मेरा उपवास गृह-विभाग की निन्दा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करने वाला है तो मैं उसको कहना चाहता हूं कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने-आपको नुकसान पहुँचाता है, मुझे या सरदार को नहीं। मैं जोरदार लफ़्ज़ों में कह चुका हूँ कि कोई बाहरी ताकत इन्सान को नीचे नहीं गिरा सकती। इन्सान को गिराने वाला इन्सान खुद ही बन सकता है। मैं जानता हूं कि मेरे जवाब के साथ इस वाक्य का कोई ताल्लुक नहीं है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि इसे हर मौके पर दोहराया जा सकता है। (156)

मैं साफ लफ्जों में कह चुका हूँ कि मेरा उपवास यूनियन के मुसलमानों की खातिर है। इसलिए वह यूनियन के हिन्दू

और सिखों और पाकिस्तान के मुसलमानों के सामने है। इस तरह से यह उपवास पाकिस्तान की अकलियत की खातिर भी है। जो विचार मैं पहले समझा चुका हूं उसी को मैं यहां थोड़े में दोहराने की कोशिश कर रहा हूं।

मैं यह आशा नहीं रख सकता कि मेरे जैसे अपूर्ण और कमजोर इंसान का फाका दोनों तरफ़ की अकलियतों को सब तरह के खतरों से पूरी तरह बचाने की ताकत रखे। फाका सबकी आत्म-शुद्धि के लिए है। उसकी पवित्रता के बारे में किसी तरह का शक जाना गलती होगी।

तीसरा सवाल यह है, "आपका उपवास ऐसे वक्त पर शुरू हुआ है जब संयुक्त राष्ट्रीय संघ की सुरक्षा-समिति बैठने वाली है। साथ ही अभी ही कराची में फिसाद हुआ है और गुजरात (पंजाब) में कत्लेआम हुआ है। हम नहीं जानते कि विदेश के अखबारों में इन वाकयात की तरफ कहां तक ध्यान दिया गया है। इसमें शक नहीं कि आपके उपवास के सामने यह वाकयात छोटे लगने लगे हैं। पाकिस्तान के प्रतिनिधियों के पिछले कारनामों से हम समझ सकते हैं कि वे जरूर इस चीज का फायदा उठायेंगे और दुनिया को कहेंगे कि गांधीजी अपने हिन्दू अनुयायियों से, जिन्होंने हिन्दुस्तान में मुसलमानों की जिन्दगी आफत में डाल रखी है, पागलपन छुड़ाने के लिए उपवास कर रहे हैं। सारी दुनिया-भर में सच्ची बात पहुँचने में तो देर लगेगी। इस दरमियान आपके उपवास का यह नतीजा आ सकता है कि संयुक्त राष्ट्रीय संघ पर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।" इस सवाल का लम्बा-चौड़ा जवाब देने की जरूरत थी। दुनिया की हकूमतों और दुनिया के लोगों को जहां तक मैं जानता हूं मैं यह कहने की हिम्मत करता हूं कि उपवास का असर अच्छा ही हुआ है। बाहर के लोग, जो हिन्दुस्तान के वाकयात को

निष्पत्तता से देख सकते हैं, मेरे फाके का उल्टा अर्थ नहीं लगायेंगे। फाका यूनियन के और पाकिस्तान के रहने वालों से पागलपन को छुड़ाने के लिए है।

अगर पाकिस्तान में मुसलमानों की अकसरियत सीधी तरह से न चले, वहां के मर्द और औरतें शरीफ न बनें तो यूनियन के मुसलमानों को बचाया नहीं जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला बेन के कल के सवाल पर से ऐसा लगता है कि पाकिस्तान के मुसलमानों की आंखें खुल गई हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे हैं।

संयुक्त राष्ट्रीय संघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करने में मदद देने वाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का उचित पथ-प्रदर्शन कर सके।

नई दिल्ली, १६ जनवरी १६४८

: ५ :

चौथा दिन

[बिस्तर पर लेटे-लेटे दिया गया प्रवचन]

भाइयो और बहनो,

मुझे आशा तो नहीं थी कि आज भी मैं बोल सकूंगा, लेकिन यह सुनकर आप खुश होंगे कि कल मेरी आवाज में जितनी शक्ति थी उससे आज मैं ज्यादा महसूस करता हूँ। इसका मतलब तो यही किया जाय कि ईश्वर की बड़ी कृपा है। चौथे रोज मुझ में जब मैंने फाका किया है, तब इतनी शक्ति नहीं रहती है; लेकिन आज तो रहती है। मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि अगर आप सब लोग आत्म-शुद्धि करने का यज्ञ करते रहेंगे तो बोलने की मेरी शक्ति आखिर तक रह सकती है। मैं इतना तो कहूंगा कि मझे किसी प्रकार की जल्दी नहीं है। जल्दी

करने से हमारा काम नहीं बनता है। मैं परम शांति में हूँ। मैं नहीं चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा जब यहां ठीक होगा तो सारे हिन्दुस्तान में ठीक होगा। इसलिए मैं समझता हूं कि जब इर्द-गिर्द में, सारे हिन्दुस्तान में और सारे पाकिस्तान में, शांति नहीं हुई है तो मुझे जिन्दा रहने में दिलचस्पी नहीं है। यह इस यज्ञ का मायना है।

[लिखित संदेश]

किसी जिम्मेदार हुकूमत के लिए सोच-समझकर किये हुए अपने किसी फैसले को बदलना आसान नहीं होता। मगर तो भी हमारी हुकूमत ने, जो हर मायने में जिम्मेदार हुकूमत है, सोच-समझकर और तेजी से अपना तय किया हुआ फैसला[1] बदल डाला है।

उनको काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और कराची से लेकर दिबरूगढ़ तक सारे मुल्क को मुबारकबाद देना चाहिए। मैं जानता हूँ कि दुनिया के सब लोग भी कहेंगे कि ऐसा बड़ा काम हमारी हुकूमत के जैसी बड़े दिलवाली हुकूमत ही कर सकती थी। इसमें मुसलमानों को सन्तुष्ट करने की बात नहीं है। यह तो अपने आपको सन्तुष्ट करने की बात है। कोई भी हुकूमत, जो बहुत बड़ी जनता की प्रतिनिधि है, बेसमझ जनता से तालियां पिटवाने के लिए कोई कदम नहीं उठा सकती है। जहां चारों तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहां आकर बड़े-से-बड़े नेता

---

१ पचपन करोड़ रुपया, जो पाकिस्तान का निकलता था उसे काश्मीर का मामला तय हो जाने पर चुकाने का भारत सरकार ने निश्चय किया था। गांधीजी के उपवास प्रारम्भ करते ही भारत-सरकार ने उसे दे देने का फैसला कर लिया। —सम्पादक

बहादुरी से अपना दिमाग ठंडा रखकर जो जहाज वे चला रहे हैं क्या उसको डूबने से न बचावें ?

हमारी हुकूमत ने क्यों यह कदम उठाया ? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवास से उनकी विचार-धारा ही बदल गई। उपवास के बिना वे, कानून जितना उनसे करवाता, उतना ही करनेवाले थे। मगर हिन्दुस्तान की हुकूमत का यह कदम सच्चे मायने में दोस्ती बढ़ाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तान की भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह होना चाहिए कि न सिर्फ काश्मीर का, बल्कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने मतभेद हैं सबका सम्मानजनक आपस-आपस में फैसला हो जावे। आज की दुश्मनी की जगह दोस्ती ले। न्याय कानून से बढ़ जाता है। अंग्रेजी में एक घरेलू कहावत है, जो सदियों से चलती आई है। उसमें कहा है कि जहां मामूली कानून काम नहीं देता, वहां न्याय हमारी मदद करता है। बहुत वक्त नहीं हुआ जब कानून के लिए और न्याय के लिए वहां अलग-अलग कचहरियां हुआ करती थीं। इस तरह से देखा जाय तो इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान की हुकूमत ने जो किया है, वह सब तरह से ठीक है। अगर मिसाल की जरूरत है तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्ड का निर्णय न था, बल्कि सारे ब्रिटिश मंत्रिमंडल का और दूसरी गोलमेज परिषद् के अधिकतर सदस्यों का भी निर्णय था। मगर यरवदा के उपवास ने तो रातों-रात वह निर्णय बदल दिया। मुझे कहा गया कि यूनियन की हुकूमत के इस बड़े काम के कारण तो अब मैं अपने उपवास को छोड़ दूं। काश कि मैं अपने दिल को ऐसा करने के लिए समझा सकता !

मैं जानता हूँ कि उन डाक्टर लोगों की, जो अपनी इच्छा से काफी त्याग करके मेरी देख-भाल कर रहे हैं, चिंता जैसे-जैसे

उपवास लम्बा होता जाता है, बढ़ती जाती है। गुरदे ठीक तरह से काम नहीं करते। उन्हें इस चीज का इतना खतरा नहीं कि आज मर जाऊंगा, मगर उपवास लम्बा चला तो हमेशा के लिए शरीर की मशीन को जो नुकसान पहुंचेगा, उससे वे डरते हैं। मगर डाक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हों, मैंने उनकी सलाह से उपवास शुरू नहीं किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एक-मात्र ईश्वर रहा है, वह कभी गलती नहीं करता। वह सर्व-शक्तिमान है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीर से कुछ और काम लेना होगा तो डाक्टर लोग कुछ भी कहें वह मुझे बच लेगा। मैं ईश्वर के हाथों में हूं। इसलिए मैं आशा करता हूं कि आप विश्वास रखेंगे कि मुझे न मौत का डर है, न अपंग होकर जिंदा रहने का। मगर मुझे लगता है कि अगर देश को मेरा कुछ भी उपयोग है तो डाक्टरों की इस चेतावनी के परिणामस्वरूप लोगों को तेजी के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनत से आज़ादी पाने के बाद हमें बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग, जिन पर दुश्मनी का शक होता है, उन पर भी विश्वास रखते हैं। बहादुर लोग अविश्वास को अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। अगर दिल्ली के हिन्दू, मुसलमान और सिखों में ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बाकी हिस्सों में आग भड़के तो भी दिल्ली शांत रहे तब मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुशकिस्मती से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों तरफ के लोग अपने-आप समझ गये लगते हैं कि उपवास का अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशों में ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्म के लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरे के आ-जा सकें और रह सकें। आत्म-शुद्धि के लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए दिल्ली पर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। यूनियन के रहनेवाले भी आखिर तो इन्सान हैं। हमारी हुकूमत ने लोगों के नाम से एक बहुत बड़ा उदार कदम उठाया है और उसको उठाते समय उसकी कीमत का ख़याल तक नहीं किया। इसका जवाब पाकिस्तान क्या देगा? इरादा हो तो रास्ते तो बहुत हैं, मगर क्या इरादा है ?

नई दिल्ली, १६ जनवरी १९४८

: ६ :

पाँचवाँ दिन

[बिस्तर पर लेटे-लेटे दिया गया प्रवचन]

भाइयो और बहनो,

ईश्वर की ही कृपा है कि आज पाँचवाँ दिन है तो भी मैं बगैर परिश्रम के आपको दो शब्द कह सकता हूं। जो मुझको कहना है वह तो मैंने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभा में सुशीला बहन सुना देगी।

इतना है कि जो कुछ भी आप करें, उसमें परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर यह नहीं है तो कुछ भी नहीं है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि इसे कैसे जिन्दा रखा जाय तो बड़ी भारी गलती करने वाले हैं। मुझको जिन्दा रखना या मारना किसी के हाथ में नहीं है। वह ईश्वर के हाथ में है। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। किसी को भी शक नहीं होना चाहिए।

इस उपवास का मतलब यह है कि अंतःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो। ऐसा करें तभी सब की भलाई है। मुझ पर दया कर आप कुछ न कीजिये। जितना दिन उपवास का काट सकता हूँ काटूंगा। ईश्वर की इच्छा होगी तो मर जाऊंगा।

मैं जानता हूं कि मेरे काफी मित्र दुखी हैं और सब कहते हैं

कि आज ही उपवास क्यों नहीं छोड़ा जाय। आज मेरे पास ऐसा सामान नहीं है। ऐसा मिल जाय तो नहीं छोड़ने का आग्रह नहीं करूंगा। अहिंसा का नियम है कि मर्यादा पर कायम रहना चाहिए, अभिमान नहीं करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मैं जो कह रहा हूँ उसमें अभिमान नहीं है। शुद्ध प्यार से कह रहा हूं। ऐसा जो जानता है वही रहने वाला है।

[लिखित संदेश]

मैं पहले भी कह चुका हूँ और फिर से दोहराता हूं कि फाके के दबाव के नीचे कुछ भी न किया जाय। मैंने देखा है कि फाके के दबाव के नीचे कई बातें कर ली जाती हैं और फाका खत्म होने के बाद मिट जाती हैं। अगर ऐसा कुछ हुआ तो बहुत बुरी बात होगी। ऐसा कभी होना ही नहीं चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है, वह है दिल की सफाई। अगर दिल की सफाई ईमानदारी से की जाय तो जिस कारण से सफाई की गई थी वह कारण मिट जाने पर भी सफाई नहीं मिटती। किसी प्रियजन के आने के कारण कमरे में सफेदी की जाती है तो जब वह आकर चला जाता है तो सफेदी मिट नहीं जाती। यह तो जड़ वस्तु की बात है। कुछ अर्से के बाद सफेदी मिटने लगती है और फिर से करवानी पड़ती है। दिल की सफाई तो एक दफा हो गई तो मरने तक कायम रहती है। फाके का दूसरा कोई योग्य मकसद नहीं हो सकता।

राजा, महाराजा और आम लोगों के तारों का ढेर बढ़ रहा है। पाकिस्तान से भी तार आ रहे हैं। वे अच्छे हैं, मगर पाकिस्तान के दोस्त और शुभचिंतक की हैसियत से मैं पाकिस्तान के रहने वालों और जिनको पाकिस्तान का भविष्य बनाना है उनको कहना चाहता हूँ कि अगर उनका ज़मीर जाग्रत न हुआ और अगर वह पाकिस्तान के गुनाह को कबूल नहीं करते तो

पाकिस्तान को कभी कायम नहीं रख सकेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तान के दोनों टुकड़े अपनी खुशी से फिर से एक हों। मगर मैं वह साफ कर देना चाहता हूं कि जबरदस्ती से मिटाने का मुझे खयाल तक नहीं आ सकता। मैं उम्मीद रखता हूँ कि मृत्यु-शैया पर पड़े मेरे यह वचन किसी को चुभेंगे नहीं। मैं उम्मीद रखता हूँ कि सब पाकिस्तानी यह समझ जायंगे कि अगर कमजोरी की वजह से या उनका दिल दुखाने के डर से मैं उसके सामने अपने दिल की सच्ची बात न रखूं तो मैं अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित होऊंगा। अगर मेरे हिसाब में कुछ गलती रही हो तो मुझे बताना चाहिए। मैं वायदा करता हूं कि अगर मैं गलती समझ गया तो अपना वचन वापस ले लूंगा। मगर जहां तक मैं जानता हूँ, पाकिस्तान के गुनाह के बारे में दो विचार हो ही नहीं सकते।

मेरे उपवास को किसी तरह से भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अन्तरात्मा की जबरदस्त अवाज के जवाब में धर्म समझ कर किया गया है। महा यातना भुगतने के बाद मैंने फाक़ा करने का फैसला किया। दिल्ली के मुसलमान भाई इस बात के साक्षी हैं। उनके प्रतिनिधि करीब-करीब रोज मुझे दिन-भर की रिपोर्ट देने आते हैं। इस पवित्र मौके पर मेरा उपवास छुड़वाने के हेतु मुझको धोखा देकर राजा, महाराजा, हिन्दू, सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेंगे, न हिन्दुस्तान की। वे सब समझ लें कि मैं कभी इतना खुश नहीं रहता, जितना कि आत्मा की खातिर उपवास करते वक्त। इस फाके से मुझे हमेशा से ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसी को इसमें विघ्न डालने की जरूरत नहीं है। विघ्न इसी शर्त पर डाला जा सकता है, कि ईमानदारी से आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझकर

शैतान की तरफ से मुंह फेर लिया है और ईश्वर की तरफ चल पड़े हैं।

नई दिल्ली, १७ जनवरी १९४८

: ७ :

उपवास की समाप्ति

[बिस्तर पर लेटे-लेटे दिया गया प्रवचन]

भाइयो और बहनो,

मैंने थोड़ा तो लिखवा दिया है। वह सुशीला बहन आप लोगों को सुना देंगी।

आज का दिन मेरे लिए तो है, आपके लिए भी मंगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा है कि आज ही गुरुगोविन्दसिंह की जन्म-तिथि है। उसी शुभ तिथि पर मैं आप लोगों की दया से फाका छोड़ सका हूं। जो दया आप लोगों से—दिल्ली के निवासियों से दिल्ली में जो दुःखी शरणार्थी पड़े हैं, उनसे, यहां की हुकूमत के सब कारोबार से—मुझे मिली है उसे, मुझे लगता है, कि मैं जिन्दगी-भर भूल नहीं सकूंगा। कलकत्ते में ऐसे ही प्रेम का अनुभव मैंने किया। यहाँ पर मैं कैसे भूल सकता हूं कि शहीद साहब ने कलकत्ते में बड़ा काम किया। अगर वह नहीं करते तो मैं ठहरनेवाला नहीं था। शहीद साहब के लिए हम लोगों के दिल में बहुत शकूक थे। अभी भी हैं। उससे हमको क्या? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उससे हमको दोस्ताना तौर से काम करना है। हम किसी के साथ किसी हालत में दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं ही नहीं। ऐसे ही सब हिन्दू और सिख भी थोड़े ही फरिश्ते हैं। अच्छे और बुरे हम में हैं; लेकिन बुरे कम हैं। हमारे यहां

जिसको हम जरायम पेशा जातियां कहते हैं, वे भी पड़ी हैं। हमारे यहां जिनको जंगली जातियाँ कहते हैं, वे भी पड़ी हैं। उन सबके साथ मिल-जुलकर रहना है।

मुसलमान बड़ी कौम है, छोटी कौम नहीं है। यहीं नहीं है, सारी दुनिया में पड़ी है। अगर हम ऐसी उम्मीद करें कि सारी दुनिया के साथ हम मित्र-भाव से रहेंगे, दोस्ताना तौर से रहेंगे तो क्या वजह है कि हम यहां के जो मुसलमान हैं उनसे दुश्मनी रखें ?

मैं भविष्य-वेत्ता नहीं हूं। फिर भी मुझे ईश्वर ने अकल दी है, मुझको ईश्वर ने दिल दिया है। उन दोनों को टटोलता हूं और आपको भविष्य सुनाता हूं कि अगर हम किसी-न-किसी कारण से एक-दूसरे से दोस्ती न कर सके, वह भी यहां के ही नहीं, पाकिस्तान के और सारी दुनिया के मुसलमानों से दोस्ती न कर सके तो समझ लें, इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि हिन्दुस्तान हमारा नहीं होगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पाई है उसे हम खो बैठेंगे।

आज इतने लोगों ने आशीर्वाद दिये हैं। सुनाया है कि हम सब हिन्दू, सिख, मुसलमान भाई-भाई बनकर रहेंगे और किसी भी हालत में, कोई भी कुछ कहे, दिल्ली के हिन्दू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब जो यहां के बाशिन्दे हैं और सब शरणार्थी हैं वे भी दुश्मनी नहीं करने वाले हैं। यह थोड़ी बात नहीं है। इसके मायने यह हैं कि अब से हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जितने लोग पड़े हैं वे सब एक मिलकर रहेंगे। हमारी कमजोरी के कारण भले ही हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो गये, लेकिन वे भी दिल से मिलाने हैं। अगर इस फाका के छूटने का यह अर्थ नहीं है तो बड़ी नम्रता से कहूंगा

कि यह फाका छुड़वाकर आपने कोई अच्छा काम नहीं किया है, कोई काम ही नहीं किया। अभी फाके की आत्मा भली-भांति पालन होना चाहिए। भेद क्यों हो ? जो दिल्ली में हो, वही सारे यूनियन में हो और जो सारे यूनियन में होगा तो पाकिस्तान में होना ही है, इसमें आप शक न रखें। आप न डरें, एक बच्चे को भी डरने का काम नहीं। आज तक हम, मेरी निगाह में, शैतान की ओर जाते थे। आज से मैं उम्मीद करता हूँ कि हम ईश्वर की ओर जाना शुरू करते हैं। लेकिन हम तय करें कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुँह ईश्वर की ओर रखा तो वहां से कभी नहीं हटेंगे। ऐसा हुआ तो सारे हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, दोनों मिलकर इस सारी दुनिया को ढांक सकेंगे, सारी दुनिया की सेवा कर सकेंगे और सारी दुनिया को ऊंची ले जा सकेंगे। मैं और किसी कारण से जिंदा रहना नहीं चाहता हूं। इन्सान जिन्दा रहता है तो इन्सानियत को ऊंचा उठाने के लिए। ईश्वर और खुदा की तरफ जाना ही इन्सान का फर्ज है। जबान से ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल कुछ भी नाम लो, वह सब झूठा है, अगर उनके दिल में वह नाम नहीं है। सब एक ही हस्ती है तो फिर कोई कारण नहीं है कि हम उस चीज को भूल जायं और एक दूसरे को दुश्मन मानें।

आज तो मैं आपसे ज्यादा कुछ कहने वाला नहीं हूं, लेकिन आज के दिन से हिन्दू निर्णय करलें कि लड़ेंगे नहीं। मैं चाहूंगा कि हिन्दू कुरान पढ़ें, जैसे वे भगवद्गीता पढ़ते हैं। सिख भी वही करें। और मैं चाहूंगा कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरों में ग्रंथसाहब पढ़ें, उनके मायने समझें। जैसे हम अपने धर्म को मानते हैं, वैसे दूसरे के धर्म को भी मानें। उर्दू-फारसी किसी जबान में भी बात लिखी हो अच्छी बात तो अच्छी बात है। जैसे कुरान शरीफ वैसे गीता और ग्रंथ साहब हैं। मेरा मकसद

यही है। चाहे आप माने या न मानें, अभी तक मैं ऐसा करता रहा हूं। मैं आपको कहूंगा और दावे से कहूंगा कि मैं पत्थर की पूजा नहीं करता हूं। मगर मैं सनातनी हिन्दू हूं। पत्थर की पूजा करने वालों से मैं नफरत नहीं करता। खुदा पत्थर में भी पड़ा है। जो पत्थर की पूजा करता है वह उसमें पत्थर नहीं, खुदा देखता है। पत्थर में ईश्वर न माने तो कुरानशरीफ खुदाई किताब है, यह क्यों माना जायगा? तो यह क्या बुतपरस्ती नहीं है? दिलों में भेद न रखें तो हम सब यह सीख सकते हैं। ऐसा हो तो फिर यह नहीं होगा कि यह हिन्दू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई भाई हैं, मिल-जुलकर रहने वाले हैं। ऐसा होना चाहिए। फिर ट्रेन में आज जो अनेक किस्म की परेशानी होती है—लड़का फेंक दिया जाता है, आदमी फेंक दिया जाता है, औरतें फेंक दी जाती हैं, वह सब मिट जायगा, हर कोई आसानी से हर जगह रह सकेंगे, कहीं किसी को डर न होगा। यूनियन ऐसा बने। पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। मुझको तबतक परम शान्ति नहीं होने वाली है जब तक यहां के शरणार्थी, जो पाकिस्तान से दुखी होकर आये हैं, अपने घरों को वापस न जा सकें और जो मुसलमान यहां से हमारे डर से, मार-पीट से, भागे हैं और जो वापस आना चाहते हैं, वे आराम से यहां न रह सकें।

बस इतना ही कहूंगा। ईश्वर हम सबको, सारी दुनिया को अच्छी अक्ल दे, सम्मति दे, होशियार करे और अपनी ओर खींच ले, जिससे हिन्दुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

[लिखित सन्देश]

मैंने यह उपवास सत्य, जिसका परिचित नाम ईश्वर है, के नाम पर किया था। जीते-जागते सत्य के बिना ईश्वर कहीं नहीं है। ईश्वर के नाम पर हम झूठ बोले हैं, हमने

बेरहमी से लोगों की हत्याएं की हैं और इसकी भी परवाह नहीं की कि वे अपराधी हैं या निर्दोष; मर्द हैं या औरतें; बच्चे हैं या बूढ़े ! हमने अपहरण व बलात् धर्म-परिवर्तन किये हैं और हमने यह सब बेहयाई से किया है। मैं नहीं समझता कि किसी ने यह काम सत्य के नाम पर किए हों। इसी नाम का उच्चारण करते हुए मैंने उपवास तोड़ा है। हमारे लोगों का दुःख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू हिन्दुओं, मुसलमानों व सिखों, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व शरणार्थियों के सौ से अधिक प्रतिनिधियों को लेकर मेरे पास आए। इन प्रतिनिधियों के दल में पाकिस्तान के हाई कमिश्नर जाहिदहुसैन साहब, दिल्ली के कमिश्नर व डिप्टी कमिश्नर और आज़ाद हिन्द फौज के जनरल शाहनवाज भी शामिल थे। नेहरू जी भी एक मूर्ति की तरह चुपचाप मेरे पास बैठे हुए थे और ऐसे ही मौलाना आजाद। राजेन्द्र बाबू ने एक दस्तावेज[1] पढ़कर सुनाया, जिस पर आगत प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर थे। इस दस्तावेज़ द्वारा मुझसे कहा गया कि उन पर अधिक चिंता का दबाव न डाला जाय और मैं अपना उपवास तोड़कर उनके दुःख का अन्त कर दूं। पाकिस्तान व भारतीय यूनियन से भी मेरे पास तार-पर-तार आये थे कि मैं उपवास तोड़ दूं। मैं इन सब मित्रों की सलाह का विरोध न कर सका। मैं उनकी इस प्रतिज्ञा पर अविश्वास नहीं कर सका कि हर हालत में हिन्दुओं, मुसलमानों सिखों, ईसाइयों या पारसियों व यहूदियों सब में मित्रता रहेगी और इस मित्रता को कभी भंग नहीं किया जायगा। इस दोस्ती को तोड़ने का मतलब राष्ट्र को तोड़ना होगा।

जब मैं यह लिख रहा हूं, मेरे पास सेहत और दीर्घ जीवन

---

१ देखिए परिशिष्ट नं० ३

की कामना वाले तारों का तांता लगा हुआ है। ईश्वर मुझे काफ़ी सेहत और विवेक दें जिससे मैं मानव-जाति की सेवा कर सकूं यदि यह आश्वासन, जो आज मुझे दिया गया है, पूरा हो जाता है तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं चौगुनी शक्ति से प्रार्थना करूंगा कि वह मुझे अपनी पूरी ज़िन्दगी जीने दे और मैं अन्त तक मानव-जाति की सेवा करूं। विद्वानों का मत है कि पूरी उम्र कम-से-कम १२५ वर्ष है और कुछ लोग १३३ वर्ष कहते हैं। मेरी प्रतिज्ञा पूरी होने में जितना समय लगने की आशा थी वह दिल्ली के नागरिकों की, जिनमें हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता भी सम्मिलित हैं, सद्भावना के कारण उससे पहले पूरी हो गई। मुझे पता चला है कि कल से हजारों शरणार्थी और दूसरे लोग भी मेरी सहानुभूति में उपवास कर रहे हैं। तो ऐसी हालत में इसका परिणाम दूसरा निकल ही नहीं सकता था। हजारों व्यक्तियोंने मेरे पास लिखित आश्वासन भेजे हैं कि लोगों के दिलों में परिवर्तन हो गया है और वे सबको भाई मानते हैं। सारी दुनिया से मेरे पास आशीर्वाद के तार आये हैं। क्या इस बात का इससे अच्छा कोई सबूत हो सकता है कि मेरे इस उपवास में ईश्वर का हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञा के शब्दों के पालन के बाद उसकी आत्मा भी है, जिसके पालन के बिना शब्दों का पालन बेकार हो जाता है। मेरी प्रतिज्ञा का उद्देश्य यूनियन तथा पाकिस्तान में हिन्दू, मुस्लिम, सिख में मित्रता स्थापित करना है। यदि यूनियन (हिन्दुस्तान) में ऐसा हो जाता है तो जैसे रात के बाद दिन होता है वैसे ही पाकिस्तान में भी ऐसा होना ही चाहिए। यदि यूनियन में अंधेरा हो तो पाकिस्तान में उजाले की आशा रखनी मूर्खता है, किन्तु यदि यूनियन में रात मिट जाने का कोई शक नहीं रह जाता तो पाकिस्तान में भी रात मिटकर ही रहेगी। पाकि-

स्तान से बहुत से संदेश आये हैं। उनमें से एक में भी इस बात का विरोध नहीं किया गया है। ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि जिस तरह इन छः दिनों तक हमारा पथ-प्रदर्शन किया है उसी तरह आगे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहे।

नई दिल्ली,

१८ जनवरी १९४८

परिशिष्ट

: १ :

उपवास की पारणा

आज जब गांधीजी ने दिन के १२ बज कर ४५ मिनट पर गम्भीरता और पवित्रता के साथ बिड़ला-भवन, नई दिल्ली में अपना उपवास छोड़ा तो सारे दिल्ली शहर और सारे देश की बड़ी भारी चिन्ता और वेदना दूर हुई। इसके पहले दिन शहर के महत्त्वपूर्ण दलों और संस्थाओं के प्रतिनिधि, जिनमें शरणार्थियों और शहर के सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचे हुए तीन हिस्सों—करोल बाग, सब्जीमंडी और पहाड़गंज—के प्रतिनिधि भी शामिल थे, डॉ० राजेन्द्रबाबू की सदारत में उन्हीं के बङ्गले पर इकट्ठे हुए थे। उन्होंने सात मुद्दों वाले एक प्रतिज्ञा-पत्र पर अपने दस्तखत किये, जिनमें गांधीजी द्वारा रखी गई उपवास छोड़ने की शर्तें पूरी करने का वचन दिया गया था। दस्तावेज़ का मसविदा गांधीजी के खास आग्रह से फारसी और देवनागरी दोनों लिपियों में लिखा गया था। सभा में मौलाना आज़ाद साहब और मेजर जनरल शाहनवाज़ भी मौजूद थे। दिल्ली के मुसलमानों के तीन प्रतिनिधि मौलाना हिफजुर्रहमान, जमीयतुल उलेमा के अहमद सईद और मौलाना हबीबुर्रहमान थे। गोस्वामी श्री गणेशदत्त, श्री बसन्तलाल और श्री नारायणदास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू-महासभा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। अलग-अलग सिक्ख-संस्थाओं के प्रतिनिधि भी थे। इसके बाद वे सब (उनकी तादाद १०० से ऊपर थी) बिड़ला-भवन गये और वहाँ गांधीजी के कमरे में उनसे उपवास छोड़ने की प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे हुए। मौलाना साहब और पंडित जवाहरलालजी वहाँ पहले ही आ चुके थे और पाकिस्तान के हाई कमिश्नर

जनाब ज़ाहिद हुसेन साहब कुछ देर बाद आये।

डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने मीटिंग की कार्रवाई शुरू करते हुए गांधीजी से कहा कि पिछली रात को सब लोग मेरे घर पर इकट्ठे हुए थे और पूरी चर्चा के बाद सबने तय किया कि उसी वक्त और वहीं प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तखत कर दिये जायँ। मगर चूँकि कुछ संस्थाओं के प्रतिनिधि उस बैठक में हाजिर नहीं थे, इसलिए हमने महसूस किया कि दस्तखत किया हुआ प्रतिज्ञा-पत्र लेकर आपके पास तुरन्त न पहुँचा जाय, बल्कि जब तक बाकी के दस्तखत न हो जायँ तब तक रुका जाय। इसके मुताबिक सबेरे फिर हमारी बैठक हुई और पिछली रात की बैठक में जो लोग गैरहाजिर थे, उन्होंने भी इस बैठक में शामिल होकर अपने दस्तखत कर दिये। सबेरे की बैठक के दौरान में देखा गया कि पिछली रात को जिन लोगों के दिल में थोड़ी हिचकिचाहट थी, वे भी पूरे आत्म-विश्वास के साथ कहते थे कि हम पूरी जिम्मेदारी की भावना से गांधीजी से उपवास छोड़ने के लिए कह सकते हैं। उन लोगों ने एक साथ और अलग-अलग जो गारण्टी दी, उसे ध्यान में रख कर मैंने कांग्रेस के सभापति के नाते उस मसविदे पर दस्तखत किये। उसके बाद दिल्ली के चीफ कमिश्नर जनाब खुर्शीद और डिप्टी कमिश्नर श्री रन्धावा ने, जो वहाँ हाजिर थे, शासन की तरफ से उस पर दस्तखत किये। यह तय किया गया है कि इस प्रतिज्ञा पर अमल करने के लिए कुछ कमेटियाँ कायम की जायँ। मुझे उम्मीद है कि अब आप अपना उपवास छोड़ देंगे।

राजेन्द्र बाबू के बाद श्री देशबन्धु गुप्ता ने सबेरे सब्जीमण्डी में करीब डेढ़ सौ मुसलमानों का एक जुलूस निकलते वक्त हिन्दुओं और मुसलमानों के भाईचारे के दिल को छूनेवाले जो दृश्य देखे, उनका बयान किया। उस मुहल्ले के हिन्दुओं ने बड़े उत्साह से जुलूस का स्वागत किया और जुलूस वालों को फल और नाश्ते की चीजें भेंट कीं।

राजेन्द्र बाबू और दूसरों की उपवास छोड़ने की प्रार्थना सुनकर गांधीजी ने कहा—"यह सब मुझे अच्छा तो लगता है, मगर एक बात

अगर आपके दिल में नहीं तो यह निकम्मा समझिये। इस मसविदे का अगर यह मतलब है कि दिल्ली को तो आप सुरक्षित रखेंगे और बाहर चाहे कितनी भी आग जले उसकी आपको परवाह न होगी तो आप बड़ी गलती करेंगे और मैं उपवास छोड़ कर मूर्ख बनूंगा। इलाहाबाद में क्या हुआ, सो तो आपने अखबारों में देखा ही होगा। नहीं देखा हो, तो देखिये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू-महासभा भी इस समझौते में शामिल हैं, ऐसा मैं समझा हूँ। अगर यहाँ के लिए वे इस समझौते में शामिल हैं और दूसरी जगह के लिये नहीं तो वह बड़ा दग़ा होगा। ईश्वर को और मुझे धोखा देना होगा। मैं देखता हूँ कि ऐसा दग़ा आज हिन्दुस्तान में बहुत चलता है।

"दिल्ली तो हिन्दुस्तान का दिल है, पायातख्त है यहाँ हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े लोग इकट्ठे हुए हैं। मनुष्य जानवर बने, मगर यहाँ पर जो हैं, वे दूध की मलाई के जैसे हैं। वे सब अगर सारे हिन्दुस्तान को इतना भी न समझा सकें कि हिन्दू, मुसलमान और दूसरे सब धर्मों के लोग भाई भाई हैं तो यह दोनों उपनिवेशों के भविष्य के लिए बुरा होगा। अगर हम आपस में लड़ते रहे तो हिन्दुस्तान का क्या होगा?" इतना कहते-कहते गांधीजी का गला आँसुओं से रुँध गया। उन्होंने जो कुछ कहा, उसे मैंने और कुछ डॉ० सुशीला ने जोर से दोहराया।

एक-दो मिनिट के बाद वे फिर बोले—"मैं घबराहट में पड़ गया, सो अपनी बात पूरी न कर सका। हम ऐसा कोई काम न करें, जिसके लिए बाद में हमें पछताना पड़े। हमें आला दरजे की बहादुरी बताना है। हम यह कर सकेंगे या नहीं, सो तो देखना है। अगर नहीं कर सकते तो मुझे फाका छोड़ने को न कहिये। आपको और सारे हिन्दुस्तान को यह काम करना है। इसका यह मतलब नहीं कि आज का आज वह हो जायगा। मुझमें वह ताकत नहीं। मगर इतना कहूँगा कि आज तक हमारा रुख शैतान की तरफ रहा, अब भगवान की तरफ रहेगा। अगर जो बात मैंने आपके सामने रखी है, उसे आप दिल से मंजूर नहीं करते,

या आपने मान लिया है कि वह आपके काबू के बाहर है तो आपको साफ-साफ मुझे यह बात कह देनी चाहिये ।

"यह कहना कि हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुओं के लिये ही है और पाकिस्तान सिर्फ मुसलमानों के लिए है, तो इससे बड़ा कुफ्र क्या हो सकता है ? शरणार्थी यह समझें कि पाकिस्तान का उद्धार भी दिल्ली के ही मार्फत होगा ।

"मैं फाके से डरने वाला आदमी नहीं हूँ । मैंने बहुत बार फाका किया है और जरूरत हुई तो फिर भी कर सकता हूँ । इसलिए आप जो भी करें, बराबर सोच-समझ कर करें ।

"जो मुसलमान भाई हमेशा मेरे पास आते हैं और बातें करते हैं कि अब दिल्ली ठीक हो गया है और हिन्दू-मुसलमान साथ रह सकेंगे, उनके दिल में अगर कुछ भी बलबला है, मन में ऐसा लगे कि आज तो मजबूरन साथ रहना है—न रहें तो जावें कहाँ—लेकिन आखिर तो कभी-न-कभी अलग होंगे ही तो उन्हें यह बात मुझे साफ-साफ कह देनी चाहिये ।

"सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को ठीक करना बड़ी मुश्किल बात है, मगर मैं तो बड़ी उम्मीद रखनेवाला इन्सान हूँ । सोचता हूँ, एक बात ठान ली तो वह क्यों न हो सके ? हिन्दुओं और मुसलमानों का समझौता आज आप करते हैं, मगर हिन्दू मानें कि मुसलमान तो यवन हैं, असुर हैं, ईश्वर को पहचान ही नहीं सकते, और मुसलमान हिंदुओं के बारे में ऐसा मानें तो इससे बढ़कर कुफ्र नहीं ।

"पटने में मुझे एक मुसलमान बड़े प्रेम से एक किताब दे गया था । लिखनेवाला बड़ा मुसलमान है । उस किताब में लिखा है, "खुदा फरमाता है कि एक काफ़िर—और हिंदू काफ़िर है—एक ज़हरी जानवर से भी बदतर है । उसे मार सकते हैं, उसे धोखा देना फर्ज है, उसके साथ शराफत क्या करना !" यह चीज अगर मुसलमानों के दिल में छुपी-छुपी भी पड़ी है तो यह कहना कि हम अच्छे रहेंगे, हिंदुओं के साथ धोखेबाजी है । एक को धोखा दिया तो सबको दिया ।

"मैं अगर सच्चे दिल से पत्थर की पूजा करता हूँ तो उसमें किसी को धोखा नहीं देता। मेरे लिए उस पत्थर में भगवान है। मैं अपने दिल को धोखा दे सकता हूँ, मगर उससे मुझे कौन बचा सकता है, उसमें किसी और को नुकसान नहीं पहुँच सकता।

"मैंने अपने दिल को बहुत टटोला। मैं मुफ्त में फाका नहीं कर रहा। मैंने सोचा, अगर दोनों के दिल में कुफ्र ही भरा है तो मैं जीकर क्या करूंगा?

"आज जो तार आये हैं, उनमें बड़े-बड़े मुसलमानों के भी तार हैं। उनसे मुझे खुशी होती है। ऐसा लगता है कि वे भी समझ गये हैं कि राज चलाने का यह तरीका नहीं।

"यह सब सुनकर भी आप मुझे फाका छोड़ने को कहेंगे तो मैं छोड़ूँगा। पीछे आप मुझे रिहाई दे देंगे। आज तक तो दिल्ली में ही रहकर करने-मरने की बात थी। यहाँ अगर काम हो गया है तो मैं पाकिस्तान में चला जाऊँगा और वहाँ के मुसलमानों को समझाऊँगा। दूसरी जगह कुछ भी हो, यहाँ लोग शान्त रहें। यहाँ के शरणार्थी समझ लें कि अगर पाकिस्तान से दिल्ली के कोई लोग वापस आते हैं तो उन्हें अपने भाई समझ कर रखना है। वहाँ वे परेशान पड़े हैं। यहां हिंदू परेशान पड़े हैं। मुसलमान जो काम करते थे, वह सब हिंदू सीख नहीं गये हैं। तो अच्छा है वे आ जावें। भले बुरे सब में हैं। यह सब सोच-समझ कर आप सब मुझे कहें कि फाका छोड़ो तो मैं छोड़ूँगा। मगर हिन्दुस्तान ऐसा का ऐसा ही रहे तो यह खेल-सा हो जायगा। उससे बेहतर है कि मुझे आप फाका करने दें और पीछे ईश्वर को उठाना होगा तो मुझे उठा लेगा।"

इसके बाद मौलाना साहब अबुलकलाम आजाद से दो शब्द बोलने के लिये कहा गया। उन्होंने कहा कि जहाँ तक साम्प्रदायिक शान्ति की गारण्टी का ताल्लुक है, वह दिल्ली के शहरियों के प्रतिनिधियों द्वारा ही दी जा सकती है। फिर भी मैं मुसलमान दोस्तों की उस राय को चुनौती

दिये बिना नहीं रह सकता, जिसका गांधीजी ने जिक्र किया है, क्योंकि वह इस्लाम के उपदेशों से सम्बन्ध रखती है। यह कहते हुए मुझे किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं होती कि वह इस्लाम के नाम पर कलंक है, इस्लाम को बदनाम करनेवाली है। कुरान में एक ऐसी आयत है जिसका मतलब है कि सारे इन्सान भाई-भाई हैं, भले ही वे किसी भी जात या मजहब के हों। गांधीजी ने मुसलमान दोस्तों के जिन विचारों का जिक्र किया है, वे इस्लाम की सीख के बिलकुल खिलाफ हैं। वे सिर्फ उस पागलपन को जाहिर करते हैं, जो थोड़े समय पहले कुछ वर्ग के लोगों पर सवार था।

इसके बाद मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब बोले। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि यह इलजाम बिलकुल गलत है कि मेरे धर्म-भाई हिन्दुस्तान को अपना मुल्क नहीं मानते, जो उनकी पूरी-पूरी वफादारी का हक़दार है, बल्कि उसे सिर्फ ऐसी जगह समझते हैं जिसमें जरूरत और हालतों के दवाब के कारण उन्हें मजबूरन रहना पड़ता है। हमारी तीस साल की राष्ट्र-सेवा का अटूट रेकार्ड इस इलजाम को झूठ साबित करता है। जब हमसे हिंदुस्तान की तरफ अपनी वफादारी को दोहराने के लिए कहा जाता है तो हम इसे अपनी राष्ट्रीयता का अपमान समझते हैं। मुझे याद है कि हाल के दंगों में एक मौके पर हमारे कांग्रेसी दोस्तों और साथियों ने हमें दिल्ली के बाहर एक सुरक्षित जगह देने की बात कही थी, क्योंकि उन्हें इस बात का यकीन नहीं था कि वे हमें अच्छी तरह दंगाइयों से बचा सकेंगे। लेकिन हमने उस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया और भगवान पर भरोसा रख कर शहर में रहना और घूमना पसन्द किया। जहाँ तक जमीयतुल उलेमा का सम्बन्ध है, मैं कह सकता हूँ कि उसके मेम्बर मौलाना आजाद साहब के और कांग्रेस के पक्के अनुयायी हैं। जो पाकिस्तान चले गये हैं, वे सिर्फ अपनी जान बचाने के लिए और दूसरी बदतर बातों के डर से ही वहाँ गये हैं। हम सब हिन्दुस्तान के नागरिकों की तरह आत्म-सम्मान और इज्जत से हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं—जो हमारा हक

है—न कि दूसरों की दया पर या मेहरबानी पर। मैं निश्चय के साथ कहता हूँ कि अगर हिन्दुस्तान पर हमला हुआ तो हम सब अपने मुल्क-हिन्दुस्तान की आखिरी आदमी तक हिफाजत करेंगे। हमने बार-बार साफ लफ़्जों में यह कहा है कि जो ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं, उन्हें हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान चले जाना चाहिये।

इसके बाद गांधीजी के उपवास के परिणामस्वरूप शहर में जो परिवर्तन हुआ है, उसका बयान करते हुए उन्होंने कहा कि इसे हम अच्छा शकुन और आनेवाली चीजों का पूर्व लक्षण समझते हैं। हमें सन्तोष है कि प्रवाह बदल गया है और अब फ़िरक़ेवाराना मेलजोल और शान्ति की तरफ बह रहा है, जब कि पहले कडुआहट और नफ़रत की वजह से दंगे हो रहे थे। अब चूँकि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा दिये गये, आश्वासनों पर हुकूमत की तरफ से दस्तखत हो गये हैं, हमें सन्तोष है कि उन आश्वासनों पर अमल होगा, अगरचे ऐसा करने में कुछ वक्त लग सकता है। इसलिए डॉ० राजेन्द्रप्रसाद की इस अपील का मैं समर्थन करता हूँ कि गांधीजी को अपना उपवास तोड़ देना चाहिये।

जब हिन्दू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की तरफ से श्री गणेशदत्त उस अपील को दोहरा चुके तब जनाब जाहिदहुसैन साहब ने गांधीजी के प्रति कुछ शब्द कहे। वे बोले कि यहाँ मैं गांधीजी को यह बतलाने के लिए खड़ा हुआ हूँ कि पाकिस्तान के लोग उनके बारे में बहुत चिन्तित हैं और उनकी तन्दुरुस्ती के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये मेरे पास रोजाना ढेरों खत आते हैं। उनकी यह दिली ख्वाहिश है कि जल्द ही ऐसी परिस्थिति पैदा हो, जिससे वह अपना उपवास छोड़ सकें। अगर ऐसी कोई बात हो, जिसे मैं गांधीजी का उपवास तुड़वाने के लिए कर सकता हूँ तो मैं और पाकिस्तान के लोग उसे करने के लिए तैयार हैं।

जाहिदहुसैन साहब के बाद हुकूमत की तरफ से प्रतिज्ञा-पत्र पर दस्तख़त करने वाले जनाब खुर्शीद और श्री रन्धावा ने आश्वासनों को

दोहराते हुए कहा कि नागरिकों के प्रतिज्ञा-पत्र में जो शर्तें बयान की गई हैं, उनपर ठीक तरह से अमल किया जायगा और हिन्दुस्तान की राजधानी के फिरकेवाराना मेल-जोल और शान्ति की पुरानी शानदार परम्परा को वापिस लाने में कोई कोशिश बाकी नहीं रहने दी जायगी।

सरदार हरबंससिंह ने सिक्खों की तरफ से अपने पूर्व वक्ताओं की बातों का समर्थन किया। इसके बाद गांधीजी ने उपवास तोड़ने की अपनी तैयारी जाहिर की। यह क्रिया हमेशा की तरह प्रार्थना से शुरू की गई, जिसमें जापानी, मुस्लिम और पारसी धर्म-ग्रन्थों में से प्रार्थनाएँ पढ़ी गईं। इसके बाद यह मंत्र पढ़ा गया—

"असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतं गमय।"

फिर आश्रमवासिनी लड़कियों ने एक हिन्दुस्तानी भजन और एक ईसाई भजन, 'जब मैं आश्चर्यजनक क्रूसको देखता हूँ' गाया। इसके बाद रामधुन-गान हुआ। मौलाना साहब ने गांधीजी को एक गिलास फल का रस दिया और वहाँ पर उपस्थित लोगोंको फल बांटे जाने और उनके खाने के बाद गांधीजी ने उस रस से अपना उपवास तोड़ा।

—प्यारेलाल

: २ :

उपवास से देश-व्यापी चिन्ता

देश की अन्दरूनी फिजा आजकल खराब है। गांधीजी को यही चीज परेशान कर रही है। आप जानते हैं उम्र उनकी काफी है; लेकिन उम्र का सवाल नहीं है। वह अकेले नेता हैं जो जनता की नब्ज को पहचानते हैं। वह कुछ ऐसे बने हुए हैं कि जनता की अन्दरूनी बातें उन तक पहुँच जाती हैं और इसीलिए वह सबसे बड़े नेता हैं। उन्होंने इसी-लिए अनशन किया है कि समय रहते हुए इस फिजा पर काबू पा लिया

जाय। अगर अब यह फिजा नहीं सुधरी तो इसका सिलसिला फिर कभी खत्म नहीं होगा।

गांधीजी ने यह देखा, देश आजाद तो हो गया—हांलाकि जैसा वह चाहते थे वैसी आजादी नहीं मिली—लेकिन आजादी के बाद इसकी जैसी फिजा होनी चाहिए थी, वह नजर नहीं आई, बल्कि वह फिजा दिन-पर-दिन बिगड़ती जाती है। उन्होंने सोचा कि मुल्क की फिजा अगर नहीं सुधरती है तो बर्बादी निश्चित है। और इसके लिए उन्होंने जान की बाजी लगा दी।

गांधीजी के उपवास से हम पर बड़ी जिम्मेदारी आ गई है। उन्होंने अपनी जान को जोखिम में डालकर फिर हमें अपना रास्ता दिखाया है। वह हमारे पथ-प्रदर्शक हैं। हिन्दुस्तान की आबरू व इज्जत के पहरेदार हैं। आपको याद है, उन्होंने हमें हमेशा ऊंचे सबक सिखाये हैं। जो बड़े होते हैं वे हमेशा अपने बड़े उसूलों पर कायम रहते हैं और छोटे लोग अपने छोटे उसूलों से देश को गिरा दिया करते हैं।

हमारा मुल्क बड़ा महान् है, जिसने गांधीजी जैसे महापुरुष को जन्म दिया कि जिन्होंने देश को उबार लिया और उबारा भी इस तरीके से, जिसकी मिसाल नहीं मिलती। आज जब हम फिर पथ-भ्रष्ट हो गये हैं तब वही हैं कि जिन्होंने फिर अपनी जान की बाजी लगा दी है। जरा देखिए उस मुट्ठी-भर हड्डी के ढांचे वाले को। अगर एक बच्चा भी चाहे तो उसे गिरा दे सकता है; लेकिन सोचिए उसकी ताकत को, जो करोड़ों को हिला देती है। क्या ताकत है ऐसी ? फौजी ताकत बहुत बड़ी होती है, लेकिन फौजी ताकत के पीछे की ताकत रूहानी होती है। अगर हम रूहानी ताकत को खत्म हो जाने दें तो हम मिट जायंगे। गांधीजी ऐसी ही रूहानी ताकत की निशानी हैं।

नई दिल्ली, १५ जनवरी १९४८

आज गांधीजी की जान तराजू पर है। हम उनकी जान बचाना

चाहते हैं। लेकिन गांधीजी की जान का भी सवाल नहीं है। सवाल देश की जान बचाने का है। हम लोग—मैं व गांधीजी—तो एक-न-एक दिन मर ही जायंगे; पर देश तो सदा जिन्दा रहेगा।

महात्माजी को देश का वातावरण साफ करना है। उपवास उनका सबसे बड़ा और अन्तिम हथियार है। मुल्क को ऊंचा उठाने के लिए उन्होंने एक और बड़ी खिदमत अपने ऊपर ली है। हमारे मुल्क में बहुत-से बहादुर और हिम्मत वाले लोग रहते हैं; लेकिन अगर सबसे बहादुर और हिम्मतवाला कोई आदमी है तो वही दुबला-पतला है, जिसने अपनी आत्म-शक्ति से ब्रिटिश साम्राज्य को हिला दिया है।

नई दिल्ली, १६ जनवरी १९४८ ❁ —जवाहरलाल नेहरू

मैं एक दुखी हृदय के साथ बम्बई आया हूं। गांधीजी के इस उपवास के बारे में हर तरह के अनुमान लगाये गये हैं। सचाई यह है कि यहां बम्बई तथा भारत के अन्य भागों में जैसी शांति है, दिल्ली में भी यद्यपि वैसी ही शांति है, लेकिन फिर भी गांधीजी का कहना है कि यह तो फौज के बल पर स्थापित शांति है, यह हृदय की एकता की परिचायिका नहीं है। गांधीजी जिस उच्च स्तर से सोचते, बोलते और अमल करते हैं, वहां तक हम पहुंच नहीं सकते। हम वहां तक पहुंचना तो चाहते हैं, लेकिन हममें उतनी क्षमता नहीं है। वे एक ऐसी ऊंचाई पर पहुंच गये हैं कि जहां आवेश या दुर्भावना से वे प्रभावित नहीं होते। वे प्रेम और मुहब्बत से भरे हैं। उनका हृदय जितना शुद्ध और पवित्र है, यदि हमारा हृदय भी वैसा ही होता तो हम उसके अन्तर को समझ सकते थे। इसलिए हम, जिस तरह वह हमसे चाहते हैं, उस तरह शासन नहीं कर पाते।

मैं साफ आदमी हूं। हिन्दू और मुसलमान दोनों से ही मैं कड़वी बातें कह बैठता हूं। मैं कई बार कह चुका हूं कि मैं मुसलमानों का दोस्त हूं। वही बात मैं फिर भी कहता हूं। जो मुसलमान मुझे ऐसा नहीं मानते, वह पागलों की-सी बातें करते हैं। वे सच-झूठ का अन्तर

करना नहीं जानते। लेकिन उनके इस आचरण के कारण मैं तो सचाई को नहीं छोड़ सकता, अपने कर्त्तव्य-पथ से नहीं खिसक सकता। कुछ भी हो, मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूं कि हमने जो कुछ भी प्राप्त किया है वह अभी अधूरा ही है। देश के भावी स्वरूप-निर्माण का असली काम अभी बाकी पड़ा है। इस काम के करने का अवसर तो आ गया है, लेकिन हम इसे अनुभव करते प्रतीत नहीं होते। अगर हमने उसे अनुभव किया होता तो आज जिस तरह का आचरण कर रहे हैं, वैसा न करते।

❀

बम्बई, १६ जनवरी १९४८ —वल्लभ भाई पटेल

मैं उन लोगों के रोष को समझता हूँ, जो अपने घर-बार छोड़कर पाकिस्तान से यहां आये हैं; लेकिन बदले की कार्यवाही से उनके कष्ट और बढ़ सकते हैं, कम नहीं हो सकते। जरूरत इस बात की है कि दोनों देशों के बीच सद्भावना पैदा करके महात्मा गांधी का जीवन बचाया जाय। गांधीजी ने हमें वह रास्ता दिखाया है, जिस पर चलकर हम एक महान् और शक्तिशाली भारत का निर्माण कर सकते हैं। हम उनके जीवन की रक्षा करें। उनके महान उद्देश्य की पूर्ति में सहायक बनें।

❀

नई दिल्ली, १७ जनवरी १९४८ —राजेन्द्रप्रसाद

जब गांधीजी एक बार कोई फैसला कर लेते हैं तो दुनिया की कोई ताकत उनको उस फैसले से हटा नहीं सकती। इसलिए उनको उस फैसले से हटाना तो एक बिलकुल नामुमकिन और अनहोनी बात थी। अब सवाल हमारे सामने सिर्फ यह था कि जिस मकसद से उन्होंने उपवास किया है, उस मकसद की पूर्ति के लिए हम क्या कर सकते हैं। मैं इन दिनों गांधीजी से बराबर मिलता रहा हूं। उन्होंने मेरे सामने उपवास छोड़ने के लिए हृदय-परिवर्तन की ये सात शर्तें रखीं।[1]

---

[1](१) महरौली में ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार की जो मजार है,

अगर आप लोग खुशी से ये बातें पूरी कर सकें तो मुझको कोई शक नहीं कि वे उसके एक मिनट बाद भी उपवास जारी नहीं रखेंगे, लेकिन यह काम दिल से और सचाई से होना चाहिए। अगर आपने कोई बनावटी चीज खड़ी करके उनका उपवास तुड़वाया तो उससे उनके दिल को बहुत चोट लगेगी।

वह मुसलमानों के लिए बिलकुल सुरक्षित होनी चाहिए, दरगाह के खिदमतगारों को जान का कोई खतरा न हो और सात-आठ दिन में वहां मुसलमानों का उर्स का जो मेला लगने वाला है, उसमें वे बिना किसी खतरे के आ-जा सकें। महरौली के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलायें कि वहां मुसलमानों की जान के लिए कोई खतरा नहीं होगा।

(२) दिल्ली की ११७ मस्जिदें, जिन पर हाल के उपद्रवों में हिन्दू और सिख शरणार्थियों ने कब्जा किया हुआ है या जिनको मन्दिर बना लिया गया है, स्वेच्छा से मुसलमानों को वापिस लौटा दी जायं और उनको उनमें इबादत करने दी जाय। जिन-जिन इलाकों में मस्जिदें हैं, वहां के हिन्दू और सिख यह विश्वास दिलायें कि ये मस्जिदें जैसी दंगों से पहले थीं, वैसी ही रहेंगी।

(३) करौलबाग, सब्जीमंडी और पहाड़गंज में मुसलमान आजादी से आ-जा सकें और उनकी जान के लिए वहां कोई खतरा न हो।

(४) दिल्ली के जो मुसलमान तंग आकर पाकिस्तान चले गये हैं, वे अगर वापिस आकर यहां बसना चाहें तो हिन्दू और सिख उनका रास्ता न रोकें।

(५) रेलों में मुसलमान बिना किसी खतरे के सफर कर सकें।

(६) मुसलमान दुकानदारों का बहिष्कार न किया जाय।

(७) दिल्ली शहर के जिन हल्कों में मुसलमान रहते हैं उनमें हिन्दुओं और सिखों के बसने का प्रश्न वहां के मुसलमानों की रजामन्दी पर छोड़ दिया जाय।

इन पांच दिनों के अन्दर गांधीजी के उपवास के फलस्वरूप मुल्क में एक जबर्दस्त तब्दीली आई है। लोगों के दिल और खयालात बदल रहे हैं और बहुत-कुछ बदल चुके हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस समस्या के दो चेहरे हैं। पश्चिमी पंजाब और स माप्रांत से जो हिन्दू और सिख भाई यहां आये हैं, वे खुशी से नहीं आये। उनके दिल दुखे हुए हैं। वे वतन से बेवतन होकर आये हैं। अगर उन्होंने बेबसी में कोई बेजा हरकत की है तो मुसलमानों को उन पर गुस्सा नहीं करना चाहिए। उनका तो यह फर्ज है कि वे उनके साथ हमदर्दी दिखायें। हिन्दू और सिख शरणार्थियों का भी यह कर्तव्य है कि वे अपनी कड़वाहटों को भूल जायं और पाकिस्तान के जुल्मों का बदला यहां के बेगुनाह मुसलमानों से न लें। हिन्दू और मुसलमान बिछुड़े हुए भाइयों की तरह एक दूसरे के गले मिलें और अपने-आपको फिजूल की बातों में न बहने दें।

❀

नई दिल्ली, १७ जनवरी १९४८ —अबुल कलाम आजाद

हमारे अनेकों विचारशील व्यक्तियों को गलत सोचने की आदत पड़ गई है। मुझे महसूस होता है कि जनता अब थक चली है और वह आशान्वित होकर काम करना नहीं चाहती। वह क्रोधित है। वह दलीलों को नहीं सुनती। वह विश्वास करती है कि गांधीजी का युग गया। परन्तु यह निःसन्देह एक बिलकुल बेहूदा बात है। आज-दिन यदि कोई स्थिर बुद्धि मनुष्य है तो वह गांधीजी हैं। दूसरे या तो कतई गलत हैं या थोड़े बहुत गलत हैं। हमें इस बेहूदगी को रोकना ही चाहिए। कुछ लोग समझते हैं कि युद्ध आवश्यक है। परन्तु हम एक हजार वर्ष पहले ऐसा कर सकते थे। आज यह सम्भव नहीं है। आप जैसे किसी पेड़ को जड़ से उखाड़ कर जीवित नहीं रख सकते वैसे ही युद्ध नहीं चला सकते। हमने एक नई तहजीब ग्रहण की है और उसे नहीं छोड़ सकते। क्या यह सम्भव है कि प्रत्येक प्रांत, नगर और ग्राम में युद्ध भी चलता रहे और हमारी तहजीब भी जारी रहे? हम अब बहुत अधिक

सुसंस्कृत हैं और गृह-युद्ध की बात करना बेवकूफी है। मेरी बात मानें तो आपको उत्तेजना का परित्याग कर देना चाहिए। जब तक आपका मन नहीं बदलता तब तक चलन में परिवर्तन नहीं होगा। केवल शब्दों से कोई लाभ नहीं होने वाला।

अत्याचारों और अमानुषिकताओं की ऐसी-ऐसी घटनाएं देखने में आई हैं कि गांधीजी के सदृश व्यक्ति यह समझने लगे हैं कि जीवित रहने से अब कोई लाभ नहीं है। मैं उनके विभिन्न उपवासों के समय उनके पास रहा हूं और उनसे झगड़ा हूं। परन्तु इस बार ऐसा करने की इच्छा नहीं है। मैं वास्तव में नहीं समझ पाता हूं कि क्यों हम जैसे बूढ़े जीवित रहें, जब कि हमारा कोई उपयोग नहीं ? गांधीजी ने यह गलत नहीं कहा कि मृत्यु के समान दूसरा कोई मित्र नहीं है। मृत्यु हमें सब कष्टों से बचाती है।

गांधीजी ने हमें एक मौका दिया है। उनका कहना है, जब तक आप यह नहीं दिखा देंगे कि आपका हृदय परिवर्तित हो गया है तबतक मैं उपवास रखूंगा और मर जाऊंगा। ❀

कलकत्ता, १५ जनवरी १९४८ —राजगोपालाचार्य

इस मुल्क ने जो तरक्की की है, जो ताकत हम लोगों ने हासिल की है और हैवानियत से इन्सानियत की तरफ हम जितने आगे बढ़े हैं, इस सबका श्रेय गांधीजी को है। उन्होंने हमारे देश में कितने ही नेताओं को पैदा किया और कितने ही ऐसे इन्कलाबी देश-भक्त पैदा किये जो अपने मुल्क के लिए फांसी के तख्ते पर झूल गए। जो जगह महात्मा गांधी की इस देश में है, वह सैकड़ों और शायद हजारों वर्षों में दुनिया के किसी मुल्क में किसी इन्सान को हासिल होती है। गांधीजी जैसे इन्सान रोज पैदा नहीं होते। हजारों वर्ष के हमारे इतिहास में चन्द आदमी ऐसे पैदा हुए हैं, जिनकी बराबरी गांधीजी से की जा सकती है। हमारा सौभाग्य है कि देश में एक सपूत पैदा हुआ जिसने सोते हुए भारत को जगाया, हमारी टेढ़ी कमर को सीधा किया और जिसने हमको

यह सिखाया कि दुश्मन कितना ही ताकतवर क्यों न हो हम निःशस्त्र होते हुए भी उसका मुकाबला कर सकते हैं और मुकाबला ही नहीं, उस पर विजय पा सकते हैं।

आज हमारे सामने जितने झगड़े-फिसाद हैं, उनको मिटाने का रास्ता अगर कोई बता सकता है तो वह महात्मा गांधी ही हैं। लेकिन आज जो कुछ हम कर रहे हैं उससे हम अपने देश को रसातल में पहुंचा रहे हैं। पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा है उसको रोकने के लिए भी यह जरूरी है कि हम अपने घर को काबू में रखें। अगर हम अपने घर में ही आग लगाते हैं तो उससे हम पाकिस्तान का नहीं, बल्कि खुद का नुकसान करते हैं। १५ अगस्त के बाद जहां हमारी ताकत बढ़नी चाहिए थी, वहां उल्टी और घटती जा रही है। हम जिस दलदल में फंसे हुए हैं उसमें ऐसे गर्क हो जायंगे कि हमें कोई भी नहीं निकाल सकेगा।

गांधीजी ने जब यह देखा कि लोग समझाने से भी नहीं समझते और रास्ता दिखाने पर भी अपनी आंखें नहीं खोलते तब उन्होंने विवश होकर अपने-आपको बलिदान करके भी लोगों को सही रास्ते पर लाने का संकल्प किया है। यही ब्रह्म-अस्त्र उन्होंने सबसे अन्त में उठाया है, एक महान् कार्य के लिये वे अपना जीवनोत्सर्ग करने को तत्पर हुए हैं। हम लोग अगर शुद्ध बन जायं तो उनका अमूल्य जीवन बच सकता है। हिन्दुस्तान में जो मुसलमान वफादार शहरी बनकर रहना चाहते हैं वे हमारे भाई हैं। हम उनको अभय-दान दें। गद्दारी करने वाले मुसलमान का भी वही हाल होगा जो हिन्दू या सिख का होगा। गद्दार सब कौमों में रहे हैं और अंग्रेजों के समय में तो ये लाखों और करोड़ों की संख्या में थे।

❀

नई दिल्ली, १६ जनवरी १९४८ —जयप्रकाश नारायण

गलतफहमी, अविश्वास, भय तथा घृणा से उत्पन्न क्रिया और प्रतिक्रिया की विनाशकारी धारा में दोनों राज्यों की जातियां डूबने वाली हैं। महात्माजी का उपवास इस प्रचण्ड धारा में थम आध्यात्मिक

बांध है। गांधीजी एक ऐसे उच्च नैतिक धरातल पर खड़े हैं कि इस्लाम के अनुयायी उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। उन्हें एक विशेष अवसर मिला है कि इस विनाशकारी धारा को पारस्परिक विश्वास और सदिच्छा की धारा में परिणत कर दें। एक विनम्र तथा साधारण मुसलमान की हैसियत से मेरी यह तीव्र तथा स्वाभाविक आकांक्षा है कि पाकिस्तान से हमारे सहधर्मी अनुकूल प्रत्युत्तर दें, उसी ऊँची सतह पर उठें और बर्बादी और शर्म की मौजूदा हालत को खत्म करें।

...महात्मा गांधी के उपवास ने एक ऐसी स्थिति उत्पन्न की है जिसकी सीमाप्रांत के अच्छे पठान उपेक्षा नहीं कर सकते और न उन्हें करनी चाहिए। सीमाप्रांत के पठान अपनी शूरता तथा अपने उच्च चरित्र के लिए प्रसिद्ध हैं। क्या मैं इस्लाम के सुन्दर नाम पर विनम्रतापूर्वक आप (सीमाप्रांत के प्रधान मन्त्री) से प्रार्थना कर सकता हूँ कि आप अपने हिन्दू तथा सिख पठानों में विश्वास उत्पन्न करें और ऐसा अनुकूल वातावरण बनावें कि वे अपने घरों को लौट जायं। इस सम्बन्ध में तुरन्त पहला कदम यह होगा कि आप दिल्ली से श्री मेहरचन्द खन्ना को वापस बुलायं, ताकि वे वहां सम्मानपूर्वक रह सकें और उनके बाद और लोग भी सीमाप्रांत में अपने-अपने घरों को लौट जायं।

पटना, १७ जनवरी १९४८ ❁ —सैयद महमूद

महामानव गांधी ने फिर सांप्रदायिक एकता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी है। पाकिस्तान के नेताओं में उसकी अच्छी प्रतिक्रिया हुई है, यह शुभ चिह्न है। इधर हिंदू तो महात्माजी की चाहे कितनी ही आलोचना इस वक्त करते हैं, कभी अपने खातिर उनके जीवन को खतरे में पड़ने देना बरदाश्त नहीं करेंगे। परन्तु इसमें कोरे 'जबानी जमा-खर्च' से काम नहीं चलने का! यदि पाकिस्तान को हिन्दुस्तान के साथ भाई-चारा ही मंजूर है तो फिर सबसे पहले उसी को कदम आगे बढ़ाना होगा; क्योंकि हिन्दुओं व सिखों के मन पर लीग और पाकिस्तान वालों की क्रियाओं की बुरी प्रतिक्रिया हुई है। यदि हम इस बात को

न समझेंगे तो कोई संतोषजनक व स्थायी हल न निकल सकेगा। यदि पाकिस्तान के नेता सचमुच गांधीजी के जीवन को इतना बेशकीमती और उन्हें मुसलमानों का सच्चा खैरख्वाह मानते हैं तो मेरा सुझाव है कि पाकिस्तान की तरफ से हिन्दू व पाकिस्तान के तमाम झगड़ों का पंच या सरपंच गांधीजी को बनायें। मुझे विश्वास होता है कि किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय या तटस्थ न्यायालय से गांधीजी के फैसले कहीं न्यायपूर्ण व सद्भावनायुक्त होंगे। मामला महात्माजी के हाथ में जाने से एक बार हिन्दू आज के समय में भले ही चौंकें, परन्तु मुसलमानों को तो इसमें हिचकने का कोई कारण ही नहीं है, जबकि महात्माजी हिंदुओं व सिखों में इतने अप्रिय बनकर भी मुसलमानों के हित में जान पर खेल रहे हैं।

*

—हरिभाऊ उपाध्याय

यदि पाकिस्तान में वर्तमान स्थिति जारी रही तो हम प्राप्त स्वतन्त्रता को खो देंगे। गांधीजी के उपवास से भारत व पाकिस्तान के नेताओं को मिलकर अपने सब मतभेद दूर कर लेने चाहिएं। इस उपवास से न केवल हिन्दुस्तान के, वरन् पाकिस्तान के लोगों को भी आंखें खुल जानी चाहिएं कि उन्होंने कैसे लज्जाजनक कृत्य किये हैं।

❀

—गज़नफ़र अली खाँ

महात्मा गांधी संसार के महानतम व्यक्ति हैं। अभी हाल में कलकत्ते में शांति स्थापित करने के लिए उन्होंने जो सेवा की वह सद्भावना पैदा करने की दिशा में उनकी महान उपलब्धि का एक छोटा-सा दृष्टान्त है। उनका उपवास उनके उद्देश्य को प्राप्त करेगा।

❀

—फ़ीरोज़ ख़ां नून

यदि गांधीजी को कुछ हो गया तो दोनों उपनिवेशों की जनता का मुँह काला हो जायगा। गांधीजी ने फिर एक बार भारत व पाकिस्तान में साम्प्रदायिक एकता के लिए अपने जीवन की बाजी लगा दी है। भारत व पाकिस्तान में दोनों सम्प्रदायों के बीच फैले हुए

साम्प्रदायिक विद्वेष को दृष्टि में रखकर बहुसंख्यकों का यह फर्ज है कि वे अल्पसंख्यकों की रक्षा करें और साम्प्रदायिक सद्‌भावना का प्रसार करें।

ढाका, १८ जनवरी १९४८ ❁ —ख्वाजा नाज़िमुद्दीन

महात्मा गांधी साम्प्रदायिक एकता के लिए जो महान प्रयत्न कर रहे हैं, वह सराहनीय है। अतः हमें उनके स्वास्थ्य व चिरायुष्य के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, ताकि भारत व पाकिस्तान दोनों में उनका प्रभाव सभी जातियों के सम्बन्ध शान्त बनाने में चिरकाल तक सहायता देता रहे।

❁

कराची, १८ जनवरी १९४८ —खुहरो

अनिश्चित समय के लिए आपके उपवास के गंभीर निर्णय की खबर मैंने और मेरी प्रजा ने गहरी चिंता के साथ सुनी है। सभी जमातों के दिल मिलाने के लिए आपकी अपील को दोनों राज्यों के सभी सद्‌भावनापूर्ण व्यक्तियों का अवश्य ही सहयोग मिलेगा और उससे दोनों राज्यों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध कायम होंगे। हम भोपाल-वासियों ने तो पिछले वर्ष अपनी मुसीबतों का बड़े प्रेम और सद्‌भाव के साथ मुकाबिला किया है। नतीजा यह कि राज्य की शांति भंग करने वाली एक भी घटना यहाँ नहीं घटी। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि अपनी पूरी शक्ति लगाकर हम इस मैत्रीपूर्ण भावना के प्रसार का यत्न करेंगे।

❁ —नवाब भोपाल

: ३ :

शांति-प्रतिज्ञा-पत्र

वह शांति-प्रतिज्ञा, जिस पर हिन्दुओं, सिखों व मुसलमानों के सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किये और जिस पर गांधीजी ने उपवास समाप्त किया, निम्न प्रकार है—

हम यह घोषित करना चाहते हैं कि हमारी दिली ख्वाहिश है कि हिन्दू, मुसलमान और सिख और दूसरे धर्मों के सब मानने वाले फिर से आपस में मिलकर भाई-भाई की तरह दिल्ली में रहें और हम उनसे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मुसलमानों की जान, धन और धर्म की हम रक्षा करेंगे और जिस तरह की घटनाएं यहां पहले हो गई हैं, उनको फिर न होने देंगे।

१. गांधीजी को हम इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि जिस तरह ख्वाजा कुतबुद्दीन के उर्स का मेला पहले हुआ करता था, वैसे ही अब भी होगा।

२. जिस तरह मुसलमान दिल्ली के सभी मुहल्लों में और खास तौर पर सब्जीमंडी, करौलबाग और पहाड़गंज में आया-जाया करते थे, वैसे ही बेखटके और बेखतरे फिर से आ-जा सकेंगे।

३. उन मस्जिदों को, जिनको मुसलमान छोड़कर चले गये हैं, या जो हिन्दुओं और सिखों के कब्जे में हैं, उनको वापस दे देंगे। जिन जगहों को खास मुसलमानों के बसने के लिए गवर्नमेंट ने रख छोड़ा है, उन पर ज़ोर-ज़बर्दस्ती से कब्जा करने की कोशिश नहीं की जायगी।

४. जो मुसलमान दिल्ली से बाहर चले गये हैं, वे अगर वापस आना चाहें तो हमारी तरफ से कोई बाधा न दी जायगी और मुसलमान अपने कारबार जिस तरह से करते थे, करने पायेंगे। हम यह इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि ये सब चीज़ें अपनी कोशिश से पूरी करेंगे और सरकारी पुलिस या फौज की ताकत इसकी खातिर इस्तैमाल करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

५. महात्माजी से हमारा अनुरोध है कि वे हमारी बातों पर विश्वास करके अपना उपवास छोड़ दें और जिस तरह आज तक देश रहनुमा रहे हैं, बने रहें।

: ४ :

गांधीजी के पहले उपवास

पहला उपवास—सन् १९१३ । दक्षिण अफ्रिका में फिनिक्स आश्रम के दो व्यक्तियों के नैतिक दोष के कारण ७ दिन का उपवास और साढ़े चार मास का नियताहार व्रत ।

दूसरा उपवास—अगस्त १९१४ । फिनिक्स आश्रम के एक व्यक्ति के जान-बूझकर धोखा देने और मिथ्याचार करने के कारण १५ दिन का ।

तीसरा उपवास—१२ मार्च १९१८ । अहमदाबाद में मज़दूरों की हड़ताल के सिलसिले में। यह उपवास तीन दिन तक चला था ।

चौथा उपवास—१३ अप्रैल १९१९ । मड़िआद में रेल की पटरी उखाड़ने का प्रयत्न करने के सिलसिले में प्रायश्चित-स्वरूप तीन दिन का ।

पाँचवां उपवास—नवम्बर १९२१ । प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत-आगमन पर बम्बई में उनके स्वागत और बहिष्कार के सम्बन्ध में सहयोगियों और असहयोगियों के बीच झगड़ा रोकने के लिये । यह उपवास पाँच दिन तक चला था ।

छठा उपवास—फरवरी १९२२। चौरीचौरा प्रसंग में पाँच दिन का ।

सातवाँ उपवास—१८ सितम्बर १९२४ । देश में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच बढ़ते हुए वैमनस्य तथा दंगों से व्याकुल होकर प्रायश्चित्त और प्रार्थना के रूप में २१ दिन का ।

आठवाँ उपवास—१९२५ । साबरमती आश्रम । आश्रम के कुछ विद्यार्थियों में नैतिक दोष पर एक सप्ताह का ।

नवाँ उपवास—२० सितम्बर १९३२ को यरवदा सेंट्रल जेल में यह आमरण अनशन शुरू हुआ था, जो आठ दिन बाद समाप्त हो गया । यह अनशन ब्रिटिश सरकार द्वारा दलित वर्ग को पृथक् निर्वाचन

का अधिकार दिये जाने के विरुद्ध था।

दसवाँ उपवास—२२ दिसम्बर १९३२। श्री अप्पा साहब पटवर्धन ने यरवदा सेंट्रल जेल में भंगी का काम मांगने और जेल-अधिकारियों के इन्कार कर देने पर आमरण अनशन शुरू कर दिया। गांधीजी का उनकी सहानुभूति में यह उपवास दो दिन चला।

ग्यारहवाँ उपवास—८ मई १९३३। यह २१ दिन का उपवास यरवदा जेल में हरिजन-आंदोलन के सम्बन्ध में अपनी और अपने साथियों की आत्म-शुद्धि के लिए किया था। उसी दिन वे जेल से छोड़ दिये गये। अतएव शेष उपवास पूना की 'पर्ण-कुटी' में पूरा हुआ।

बारहवाँ उपवास—१६ अगस्त १९३३। उपर्युक्त उपवास के बाद व्यक्तिगत सत्याग्रह के कारण गांधीजी फिर गिरफ्तार करके यरवदा जेल में बन्द कर दिये गए। जेल से उन्होंने हरिजन-कार्य के लिए इजाज़त मांगी, जिसके न मिलने पर यह अनशन शुरू हुआ। सातवें दिन वे जेल से छोड़ दिये गए।

तेरहवाँ उपवास—७ जौलाई १९३४। हरिजन-यात्रा के सिलसिले में अजमेर की सभा में सनातनी स्वामी लालनाथ के एक स्वयंसेवक द्वारा पीट दिये जाने पर सेवाग्राम में यह ७ दिन का अनशन प्रायश्चित्त के रूप में किया था।

चौदहवाँ उपवास—३ मार्च १९३९। राजकोट का आमरण अनशन, जो वाइसराय के आश्वासन देने पर ४ दिन के बाद समाप्त हुआ था।

पन्द्रहवाँ उपवास—१० फरवरी १९४३। कैदी की हालत में, आगाखां महल में "सर्वोच्च अदालत से न्याय की अपील" के रूप में २१ दिन का उपवास।

सोलहवाँ उपवास—२ सितम्बर १९४७। कलकत्ते में हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए। यह ७३ घंटे चला था।

: ५ :

'एकला चलो रे'

यदि तोर डाक सुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे।
यदि केउ कथा ना कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि सबाई थाके मुख फिराये, सबाई करे भय—
तबे परान खुले
ओ तुई मुख फूटे तोर मनेर कथा एकला बोले रे।
यदि सबाई फिरे जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि गहन पथे जाबार काले केउ फिरे ना चाय—
तबे पथेर कांटा
ओ, तुई रक्त माखा चरन तले एकला दलो रे।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा,
यदि झातु बादले आंधार राते दुआर देय घरे—
तबे बज्रानले
आपन बुकेर पांजर ज्वालिये निये एकला जलो रे।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अर्थात्—

यदि तेरी पुकार सुनकर कोई नहीं आता तो तू अकेला ही चल !
अकेला चल, अकेला चल, अकेला ही चल !
यदि किसी के मुँह से शब्द न निकले। अरे, अरे, ओ अभागे !
यदि सभी मुँह मोड़ लें, सभी भयभीत हों,
तब अपने प्राणों को उन्मुक्त कर तू स्वयं ही अपनी तान छेड़ दे।
अकेला ही तान छेड़ दे।
यदि तेरे संगी-साथी सभी लौट जायँ, अरे, अरे, ओ अभागे !
यदि दुर्गम पथ में कोई तेरा साथ देने का इच्छुक न हो।
कण्टकाकीर्ण मार्ग में

रक्तरञ्जित चरणों से ओ भाई, तू अकेला ही चल।

यदि प्रकाश के लिए कोई दीप नहीं रखता,

यदि मेघाच्छन्न और अंधकारपूर्ण रात्रि में कोई घर का द्वार बन्द कर देता है,

तब विद्युत् बनकर

सबका तू अकेला ही दीपक बनकर जल।

: ६ :

'जे पीड़ पराई जाणे रे'

वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीड़ पराई जाणे रे,
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे,
सकल लोक मां सहुने वंदे, निन्दा न करे केनी रे,
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, पर स्त्री जेने मात रे;
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह माया व्यापे नहिं जेने, दृढ़ वैराग्य जेना मनमां रे;
राम नामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना तनमां रे।
वण लोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे;
भणे नरसैंयो तेनु दरसन करतां, कुल एकोतेर तार्या रे।

—नरसी मेहता

: ७ :

सर्वधर्म-समभाव

हमारे व्रतों में सहिष्णुता के नाम से परिचित व्रत को यह नया नाम दिया गया है। सहिष्णुता अंग्रेजी शब्द 'टालरेशन' का अनुवाद है। मुझे यह पसंद न था, पर उस समय दूसरा शब्द सूझता नहीं था। काका साहब को भी यह नहीं रुचा था। उन्होंने 'सर्वधर्म-आदर' शब्द

सुझाया। मुझे यह भी नहीं जंचा। दूसरे धर्मों को सहने की भावन में उनमें न्यूनता मानी जाती है। आदर में कृपा का भाव आता है। अहिंसा हमें दूसरे धर्मों के प्रति समभाव सिखाती है। आदर औ सहिष्णुता अहिंसा की दृष्टि से पर्याप्त नहीं हैं। दूसरे धर्मों के प्रति समभाव रखने के मूल में अपने धर्म की अपूर्णता स्वीकार भी आ ह जाता है। सत्य की आराधना, अहिंसा की कसौटी यही सिखाती है सम्पूर्ण सत्य को यदि हमने देख पाया होता तो फिर सत्य के आग्रह क्या बात थी? तब तो हम परमेश्वर हो गये होते, क्योंकि हमारी भाव है कि सत्य ही परमेश्वर है। हम पूर्ण सत्य को पहचानते नहीं हैं, इ लिए उनका आग्रह करते हैं। इसी से पुरुषार्थ की गुंजाइश है। इस अपनी अपूर्णता की स्वीकृति आगई। यदि हम अपूर्ण हैं तो हमारे द्वार कल्पित धर्म भी अपूर्ण है, स्वतन्त्र धर्म सम्पूर्ण है। हमने उसे देखा न है, वैसे ही जैसे ईश्वर को नहीं देखा है। हमारा माना हुआ धर्म अ है और उसमें सदा परिवर्तन होते रहते हैं, होते रहेंगे। यह होने हम उत्तरोत्तर ऊपर उठ सकते हैं, सत्य की ओर, ईश्वर की ओर दि प्रतिदिन आगे बढ़ सकते हैं। जब मनुष्य-कल्पित सब धर्मों को अपृ मान लेते हैं तो फिर किसी को ऊंच-नीच मानने की बात नहीं जाती। सभी सच्चे हैं, पर सभी अपूर्ण हैं, इसलिए दोष के हैं। समभाव होने पर भी हम उन में दोष देख सकते हैं। हमें अ में भी दोष देखना चाहिए। उस दोष के कारण उसका त्याग न क बल्कि दोष को दूर करें। इस प्रकार समभाव रखने से दूसरे धर्मों ग्राह्य अंश को अपने धर्म में लेते संकोच न होगा। इतना ही न बल्कि वैसा करना धर्म हो जायगा।

सब धर्म ईश्वरदत्त हैं, पर मनुष्य-कल्पित होने के कारण, मनु द्वारा उनका प्रचार होने के कारण, वे अपूर्ण हैं। ईश्वरदत्त धर्म अगम्य है। उसे भाषा में मनुष्य प्रकट करता है, उसका अर्थ भी मनुष्य लगात है। किसका अर्थ सच्चा माना जाय? सब अपनी-अपनी दृष्टि से, ज

तक वह दृष्टि बनी है तब तक, सच्चे पर झूठा होना भी असंभव नहीं है। इसलिए हमें सब धर्मों के प्रति समभाव रखना चाहिए। इससे अपने धर्म के प्रति उदासीनता नहीं आती, बल्कि स्वधर्म विषयक प्रेम अंधा न रहकर ज्ञानमय होजाता है, अधिक सात्त्विक और निर्मल बनता है। सब धर्मों के प्रति समभाव आने पर ही हमारे दिव्य-चक्षु खुल सकते हैं। धर्मांधता और दिव्य दर्शन में उत्तर-दक्षिण जितना अंतर है। धर्मज्ञान होने पर अंतराय मिट जाते हैं और समभाव उत्पन्न होजाता है। इस समभाव के विकास से हम अपने धर्म को अधिक पहचान सकते हैं।

यहां धर्म-अधर्म का भेद नहीं मिटता। यहां तो उन धर्मों की बात है, जिन्हें हम निर्धारित धर्म के रूप में जानते हैं। इन सभी धर्मों के मूल सिद्धांत एक ही हैं। सभी में संत स्त्री-पुरुष हो गये हैं, आज भी मौजूद हैं। इसलिए धर्मों के प्रति समभाव में और धर्मियों–मनुष्यों के प्रति जिस समभाव की बात है उसमें, कुछ अन्तर है। मनुष्य मात्र-दुष्ट और श्रेष्ठ के प्रति, धर्मी और अधर्मी के प्रति समभाव की अपेक्षा है, पर अधर्म के प्रति कदापि नहीं।

तब प्रश्न यह होता है कि बहुत से धर्मों की आवश्यकता क्या है? हम जानते हैं कि धर्म अनेक हैं। आत्मा एक है, पर मनुष्यदेह अगणित हैं। देह की असंख्यता टाले नहीं टल सकती, तथापि आत्मा की एकता को हम पहचान सकते हैं। धर्म का मूल एक है, जैसे वृक्ष का; पर उसके पत्ते असंख्य हैं।

वह विषय इतने महत्त्व का है कि मैं इस पर और विस्तार से लिखना चाहता हूँ। अपना कुछ अनुभव लिख दूँ तो शायद समभाव का अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाय। यहाँ की तरह फिनिक्स में भी नित्य प्रार्थना होती थी। हिंदू, मुसलमान और ईसाई थे। स्वर्गीय सेठ रुस्तमजी या उनके लड़के प्रायः उपस्थित रहते ही थे। सेठ रुस्तमजी को "मनेवहालुं वहालुं दादा रामजीनुं नाम" (मुझे राम नाम प्रिय है)

बहुत अच्छा लगता था। मुझे याद आ रहा है कि एक बार मगनलाल या काशी हम सब को गवा रहे थे। रुस्तमजी सेठ उल्लास में बोल उठे, 'दादा रामजी' के बदले 'दादा होरमज्द' गाओ न ! गवाने और गानेवालों ने इस सूचना पर तुरंत इस तरह अमल किया मानो वह बिलकुल स्वाभाविक हो। और इसके बाद से रुस्तमजी जब उपस्थित होते तब तो अवश्य ही, और वे न होते तब भी, कभी-कभी हम लोग वह भजन 'दादा होरमज्द' के नाम से गाते। स्व० दाऊद सेठ का पुत्र हुसैन तो आश्रम में बहुत बार रहता। वह प्रार्थना में उत्साह-पूर्वक शामिल होता था। वह खुद बहुत मधुर स्वर में वाद्य-यंत्र के साथ "यह बहारे बाग–दुनिया चंद रोज" गाया करता, तथा वह भजन हम सब को उसने सिखा दिया था। वह बहुत बार प्रार्थना में गाया जाता था। हमारे यहाँ की 'आश्रम-भजनावलि' में उसे स्थान मिला है, वह सत्य-प्रिय हुसैन की स्मृति है। उसकी अपेक्षा अधिक तत्परता से सत्य का आचारण करने वाला नवयुवक मैंने नहीं देखा। जोसफ रोयपेन आश्रम में अक्सर आते-जाते थे। वह ईसाई थे। उन्हें 'वैष्णव-जन' वाला भजन बहुत अच्छा लगता था। संगीत का उन्हें अच्छा ज्ञान था। उन्होंने 'वैष्णव जन' के स्थान पर "क्रिश्चियन-जन तो तेने कहिए" अलाप दिया। सब ने तुरंत उनका साथ दिया। मैंने देखा कि ज़ोसफ़ के आनंद का पारावार न रहा।

आत्मसंतोष के लिए जब मैं भिन्न-भिन्न धर्म-पुस्तकें उलट रहा था तब मैंने ईसाई, इस्लाम, जरथुस्ती, यहूदी और हिंदू इतनों की पुस्तकों का अपने संतोषभर के लिये परिचय कर लिया था। मैं कह सकता हूँ कि इस अध्ययन के समय सभी धर्मों के प्रति मेरे मन में समभाव था। मैं यह नहीं कहता कि उस समय मुझे यह ज्ञान था। उस समय समभाव का भी पूरा परिचय न रहा होगा; परंतु उस समय की अपनी स्मृतियाँ ताज़ी करता हूँ तो मुझे याद नहीं आता कि उन धर्मों के सम्बन्ध में टीका-टिप्पणी करने की इच्छा तक हुई हो, वरन् उनके

ग्रन्थों को धर्म-ग्रन्थ मानकर आदर-पूर्वक पढ़ता और सब में मूल नैतिक सिद्धांत एक जैसे ही पाता था। कितनी ही बातें मैं नहीं समझ सकता था। यही बात हिंदू धर्म ग्रन्थों के सम्बन्ध में भी थी। आज भी कितनी ही बातें नहीं समझता; पर अनुभव से देखता हूँ कि जिसे हम नहीं समझ सकते वह ग़लत ही है, यह मानने की जल्दबाज़ी करना भूल है। कितनी ही बातें पहले समझ में नहीं आती थीं, वे आज दीपक की तरह दिखाई देती हैं। समभाव का अभ्यास करने से अनेक गुत्थियां अपने आप सुलझ जाती हैं और जहाँ हमें दोष ही दिखाई दें, वहाँ उन्हें दरशाने में भी नम्रता और विवेक होने के कारण किसी को दुःख नहीं होता।

एक कठिनाई शायद रह जाती है। ऊपर मैंने कहा है कि धर्म-धर्म का भेद रहता है और धर्म के प्रति समभाव रखने का अभ्यास करना यहाँ उद्देश्य नहीं है। यदि ऐसा हो तो धर्माधर्म का निर्णय करने में ही क्या समभाव की श्रृङ्खला नहीं टूट जाती? यह प्रश्न उठ सकता है। और यह भी संभव है कि ऐसा निर्णय करने वाला भूल कर बैठे। परंतु हम में यदि वास्तविक अहिंसा मौजूद रहे तो हम वैरभाव में से बच जाते हैं; क्योंकि अधर्म देखते हुए भी उस अधर्म का आचरण करने वाले के प्रति तो प्रेम-भाव ही होगा। इससे या तो वह हमारी दृष्टि स्वीकार कर लेगा अथवा हमारी भूल हमें दिखायेगा। या दोनों एक दूसरे के मतभेद को सहन करेंगे। अंत में विपक्षी अहिंसक न हुआ तो वह कठोरता से काम लेगा; तो भी हम अहिंसा के सच्चे पुजारी होंगे तो इसमें संदेह नहीं कि हमारी मृदुता उसकी कठोरता को अवश्य दूर कर देगी। दूसरे को, भूल के लिए भी, हमें पीड़ा नहीं पहुँचानी है, हमें खुद ही कष्ट सहना है। इस स्वर्ण-नियम का पालन करने वाला सभी संकटों से बच जाता है।

'मंगल प्रभात' से] —मो० क० गांधी

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान्!